जुलाई 2018

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

जिनमें परमात्मा व्यक्त हुए हैं, ऐसे 'ज्ञानीपुरुष' को पूर्ण रूप से अर्पित हो जाना चाहिए। दादा के चरणों में समर्पित हो जाएँगे तो काम ही हो जाएगा न !

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 13 अंक : 9
अखंड क्रमांक : 153
जुलाई 2018

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Editor : Dimple Mehta
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421
Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421
Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.
Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421
Total 32 pages (including cover)

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ज्ञानीपुरुष के चरणों में समर्पण से मोक्ष

संपादकीय

'और कुछ मत खोज! सिर्फ एक सत्पुरुष को खोजकर उनके चरणकमलों में सर्व भाव अर्पण करके रहो फिर भी यदि मोक्ष नहीं मिले तो मुझसे ले जाना!'
-श्रीमद् राजचंद्र।

वीतरागों ने कहा है, 'मोक्ष में जाने के लिए कुछ भी नहीं करना है। सिर्फ जो खुद छूट चुके हैं उन्हें खोज लेना, जो खुद तर चुके हैं और जिनमें अनेकों को तारने का सामर्थ्य है, ऐसे तरणतारण ज्ञानीपुरुष को खोज लेना और निर्भय होकर उनके पीछे-पीछे चले जाना। मोक्ष में जाना हो तो सजीवन मूर्ति के बगैर, उन्हें समर्पित हुए बगैर और उनकी आज्ञा का पालन किए बगैर कभी भी मोक्ष में नहीं जा सकते।'

वास्तव में समर्पण अर्थात् हम अपनी सभी गलत मान्यताओं को ज्ञानी के चरणों में समर्पित कर दें। जिन कारणों से भ्रांति हुई है, उन भ्रांति के वे कारण, भ्रांति और भ्रांति के वे फल, वगैरह समर्पित हो जाते हैं, तब फिर आप शुद्धात्मा बन जाते हो। आप उन रोंग बिलीफों को समर्पित कर देते हो और दादाश्री राइट बिलीफ दे देते हैं। मिथ्यादर्शन को भेदकर सम्यक्दर्शन की प्राप्ति करवाते हैं।

सादी भाषा में समर्पण का मतलब है आप जिन्हें समर्पित हुए हो, उन पर संपूर्ण रूप से विश्वास। वे जो भी कहें, वे जो भी करें उसमें खुद की बुद्धि का ज़रा भी उपयोग नहीं करें और पूरी श्रद्धा से उनके कहे अनुसार करे, उसे समर्पण कहते हैं। समर्पण किसे कहते हैं कि खुद मरकर जीना, वे चाहे कुछ भी करें फिर भी खुद भेद न डाले या अलग नहीं हो।

प्रस्तुत अंक में परम पूज्य दादाश्री समर्पण भाव का विविध प्रकार से विश्लेषण करते हुए समझाते हैं कि समर्पण का अर्थ क्या है? अनन्य भाव का अर्थ क्या है? समर्पित किसे होना है, समर्पित होने के लिए किस लेवल तक जाना पड़ता है, (समर्पण) समर्पित होने में रुकावट डालने वाले बाधक कारण है, स्वछंद।

ज्ञानीपुरुष पूरे वर्ल्ड का आश्चर्य कहलाते हैं, जो किसी भी चीज़ के भिखारी नहीं है, जिनमें परमात्मा व्यक्त हो चुके हैं। जिनसे हमने पटंतर प्राप्त किया है। यदि उन्हें सर्वस्व समर्पित कर दें तो काम हो जाएगा। किसी से भी प्रभावित न हो, यदि इस तरह से तुझे दुनिया को एक ओर रखना आ जाए तो उसे समर्पण भाव कहते हैं। अर्थात् जो ज्ञानीपुरुष का हो, वही मेरा हो। खुद की नाव को उनसे अलग ही न होने दे। आत्मज्ञान की प्राप्ति के बाद महात्माओं को मोक्ष मार्ग में आगे की श्रेणी में प्रगति के लिए ज्ञानी के प्रति समर्पण भाव को संपूर्ण रूप से समझकर उसकी प्राप्ति कर सके, ऐसी हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

ज्ञानीपुरुष के चरणों में समर्पण से मोक्ष

सुखी होने का सही मार्ग ही समर्पण

प्रश्नकर्ता : भगवान को सब कुछ समर्पण करके रहना, वह सही और सुखी होने का मार्ग है न?

दादाश्री : हाँ, लेकिन भगवान को समर्पण करके कोई रहा ही नहीं न इस दुनिया में! मुँह पर बोलते ज़रूर हैं कि भगवान को समर्पण! लेकिन सभी ने पत्नी को समर्पण किया हुआ है। व्यवहार में बोलते हैं कि भगवान को समर्पण किया है, भक्ति करते हैं तब भगवान को समर्पण बोलते हैं लेकिन यदि भगवान को समर्पण कर लिया हो तो फिर उसे दु:ख ही क्या रहेगा?

प्रश्नकर्ता : 'सच्चे गुरु को खुद का सर्वस्व सौंप देने से सर्व कार्य सिद्ध हो जाते हैं।' यह बात व्यवहार में कितने अंश तक सत्य है?

दादाश्री : यह तो व्यवहार में बिल्कुल सच है। गुरु को सौंपने से उसका एक जन्म अच्छा बीतता है क्योंकि गुरु को सौंपा मतलब कि गुरु की आज्ञा अनुसार चला तो उसे दु:ख नहीं आता।

गुरु के बिना कोई मोक्ष में नहीं गया है। सिर्फ तीर्थंकर, जो कि स्वयंबुद्ध थे, वे गए हैं। लेकिन उन्हें पिछले किसी जन्म में गुरु मिले थे। उनके द्वारा उनको ज्ञानांजन का अंजन लग गया था इसलिए उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई लेकिन अन्य लोग तो गुरु के बिना मार खा जाते हैं। सिर पर कोई नहीं हो तो स्वच्छंद आ जाता है।

अंतर, गुरु और सद्गुरु में

प्रश्नकर्ता : मैं बहुत जगहों पर गया और सभी जगह मैंने प्रश्न किया कि गुरु का अर्थ क्या? लेकिन मुझे कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला।

दादाश्री : ठीक है। गुरु उन्हें कहते हैं कि जिन्हें देखते ही अपना मस्तक झुक जाए और सद्गुरु किसे कहा जाता है कि जिन्हें मन-वचन-काया समर्पित कर सकते हैं। गुरु और सद्गुरु में यह अंतर है। ज्ञानीपुरुष सद्गुरु कहलाते हैं, जिन्हें सत् का अनुभव है। अब, दूसरे जो गुरु हैं लोग उनके फॉलोअर्स (शिष्य-अनुयायी) कहलाते हैं। वे आगे चलते जाते हैं और शिष्यों को रास्ता दिखाते जाते हैं। वे मार्गदर्शक कहलाते हैं। अर्थात् गुरु ऐसे होने चाहिए जिनके सामने हमारा मस्तक झुक जाए। उन्हें देखते ही हमारा मस्तक न झुके तो वे किस काम के?

सत्पुरुष के चरणों में सभी भाव अर्पण

प्रश्नकर्ता : श्रीमद्जी कहते हैं कि 'सद्गुरु के चरण चिन्हों पर चला जा। नवें जन्म में मोक्ष मिल जाएगा,' वे क्या कहना चाहते हैं?

दादाश्री : सद्गुरु को खोजना मुश्किल है न! वैसे सद्गुरु यहाँ तो मिल नहीं सकते। वह आसान चीज़ नहीं है। सद्गुरु ज्ञानी होने चाहिए। ऐसे गुरु भी होते हैं जो ज्ञानी नहीं है, वे पूरी तरह से नहीं समझते जबकि ज्ञानी तो संपूर्ण रूप

से समझा देते हैं आपको, सारी हकीकत समझा देते हैं। जिन्हें कोई भी चीज़ जाननी बाकी नहीं रही हो, उन्हें ज्ञानी कहते हैं। ऐसा नहीं कि सिर्फ जैनों का ही जानते हो, जो सब कुछ जानते हों, उन्हें ज्ञानी कहते हैं। उनसे मिलने के बाद नवें जन्म में मोक्ष हो जाता है या फिर दो जन्मों में भी मोक्ष हो सकता है।

पर सद्गुरु मिलने मुश्किल हैं न! अभी तो सच्चे गुरु भी नहीं हैं, वहाँ सद्गुरु कहाँ से होंगे फिर? और जब श्रीमद् राजचंद्र जैसे सद्गुरु थे, तब लोग उन्हें पहचान नहीं पाए।

ये सब गुरु तो हैं लेकिन सद्गुरु किसे कहते हैं? प्रभु श्री लघुराज स्वामी-श्रीमद् राजचंद्र के शिष्य को सद्गुरु कहेंगे। जिनमें स्वच्छंद का एक अंश भी नहीं था, उनका सब कुछ कृपालुदेव के अधीन था, कृपालुदेव हाज़िर हों या नहीं हों फिर भी उनके ही अधीन। वे सच्चे पुरुष थे।

मोक्ष के गारन्टर

इसलिए कृपालुदेव ने कहा, 'और कुछ मत खोज....!' अब कृपालुदेव ने अपने जाने के बाद मोक्ष की आराधना के लिए सिर्फ यही वाक्य कहा था। बाकी सब तो, लोगों को जो पत्र लिखे थे, वे सभी पत्र एकत्रित किए गए हैं। वे पढ़ने के लिए बहुत अच्छे हैं लेकिन कृपालुदेव ने काठियावाड़ी भाषा में क्या कहा है? यही कि 'और कुछ मत खोज। मात्र एक सत्पुरुष को ही खोजकर उनके चरणकमलों में सभी भाव अर्पण करके चलता जा। फिर भी यदि मोक्ष नहीं मिले तो मुझसे ले जाना।'

'मैं मोक्ष दे दूँगा, बाकी सब बेकार की माथापच्ची क्यों कर रहा है' इस अवसर्पिणि काल में ऐसी गारन्टी देने वाले लोग हैं क्या? यह अवसर्पिणि काल है। इस काल में गारन्टी देने वाले अभी तक कितने पुरुष हो गए हैं? सिर्फ, ये अकेले ही! कि यदि मोक्ष नहीं मिले तो मेरे पास आना। देखो, कृपालुदेव ने इसमें कैसा रास्ता बताया है!

कृपालुदेव का सच्चा भक्त किसे कहेंगे? कि जिसे सिर्फ इतना ही याद रहे कि 'और कुछ खोजने के बजाय....!'

तीर्थंकरों का आशय इतना ही है

अतः तुझे मोक्ष में जाना है तो सजीवन मूर्ति को ढूँढ निकाल क्योंकि सजीवन मूर्ति के बगैर कभी भी स्वच्छंद नहीं जा सकता। सजीवन मूर्ति की सिर्फ यही कीमत है!

प्रश्नकर्ता : सजीवन मूर्ति का अर्थ समझ में नहीं आया।

दादाश्री : सजीवन मूर्ति अर्थात् जो प्रत्यक्ष आँखों से दिखाई दें, हमें डाँटे, भूल होने पर वे हमसे दो शब्द कहें। कृपालुदेव तो चले गए, वे आज आपकी भूल को खत्म नहीं कर सकते। इसलिए ऐसा कहा है न कि सजीवन मूर्ति को खोजना।

स्वच्छंद चला गया, उसकी निशानी क्या है? सम्यकत्व। जब तक सम्यकत्व प्राप्त नहीं हो जाता तब तक स्वच्छंद ही है। इसलिए 'जब तक सम्यकत्व प्राप्त नहीं हो जाता, तब तक किसी भी समकित जीव की निश्रा में रहो,' ऐसा भगवान का, चौबीस तीर्थंकरों का आशय है। उसके लिए प्रत्यक्ष की आवश्यकता है। प्रत्यक्ष आज्ञा की आवश्यकता है। परोक्ष आज्ञा नहीं चलेगी क्योंकि आज्ञा महावीर भगवान की दी हुई है लेकिन तू अपनी समझ से चलता है न? यानी समझ का ही दखल है न? सारा झमेला समझ का ही है, इसी वजह से सब पॉइज़नस (जहरीला) हो जाता है। अतः प्रत्यक्ष होंगे, तभी काम बनेगा। मोक्ष का साधन प्रत्यक्ष रूप में होना चाहिए। प्रत्यक्ष होगा तभी स्वच्छंद रुकेगा।

प्रत्यक्ष ज्ञानी को समर्पण

प्रश्नकर्ता : सिर्फ प्रत्यक्ष सद्गुरु की भक्ति ही होनी चाहिए, वही कहना चाहते हैं न?

दादाश्री : अर्पणता चाहिए, पूर्ण रूप से।

प्रश्नकर्ता : सद्गुरु के प्रति संपूर्ण समर्पण भाव से रहे तो?

दादाश्री : तो काम हो जाए। समर्पण भाव हो तो सारा काम हो जाए फिर कुछ भी बाकी रहेगा ही नहीं। मन-वचन-काया सहित समर्पण चाहिए।

प्रश्नकर्ता : समर्पण का मतलब क्या है?

दादाश्री : समर्पण यानी आप क्या कहना चाहते हो?

प्रश्नकर्ता : मैं ऐसा मानता हूँ कि समर्पण अर्थात् सब कुछ दे देना।

दादाश्री : हाँ, सब कुछ अर्पण कर देना। मन-वचन-काया की तीनों पोटलियाँ आपको अर्पण कर देता हूँ। तब फिर ज्ञानीपुरुष क्या करते हैं कि 'भाई, मैं कहाँ संभालूँ? तुझे जितना चाहिए उतने का उपयोग करना और बाकी का मुझसे पूछकर उपयोग करना।' क्या कहा?

प्रश्नकर्ता : मुझसे पूछकर उपयोग करना।

दादाश्री : अर्थात् हम आपको वापस दे रहे हैं उसका अर्थ यह नहीं है कि आपको ठीक लगे उतना उपयोग करो। इन मन-वचन-काया का उपयोग आपको मुझसे पूछकर करना चाहिए, क्या? क्या अर्पण करने के बाद इसका उपयोग पूछकर नहीं करना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : आपने जो मन-वचन-काया के समर्पण की बात की है, वह कहना तो सरल है लेकिन करना उतना सरल नहीं है।

दादाश्री : नहीं! नहीं कर सकते। अभी ऐसा करना मुश्किल है। वह तो, हम करवा देते हैं, उसके बाद सब कुछ ठीक हो जाता है।

जब तक समर्पणता नहीं आती तब तक कषाय रहेंगे

प्रश्नकर्ता : यदि गुरुदेव पर समर्पण भाव आ जाए तो आप जो कहते हैं, वह ठीक है लेकिन यदि समर्पण भाव नहीं आए तब तो ये सभी चीज़ें होनी ही हैं और उनका असर होना ही है, कषाय तो होने ही हैं।

दादाश्री : हाँ! वे तो होंगे ही न! जब तक समर्पण नहीं हो जाता, तब तक तो होते ही रहेंगे न! इसीलिए हमने इन सभी को ज्ञान दे दिया है ताकि इन्हें भविष्य में ज़रा भी चिंता न हो। किसी भी प्रकार का भय न रहे कि अगर ऐसा हो जाएगा तो? ऐसे ज्ञान की ज़रूरत है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : है।

दादाश्री : भविष्य में किसी भी प्रकार का भय न लगे, ईर्ष्या न हो। चिंता रहित, भय रहित बना दे, ऐसे ज्ञान की ज़रूरत है या नहीं? तो फिर इंसान खुद का धर्म करेगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : धर्म करने की ज़रूरत ही कहाँ रही? अंदर से प्रेरणा आती रहेगी। ज्ञान मिलने के बाद आज्ञा में रहेंगे तो अंदर से प्रेरणा आती रहेगी। उसके बाद चिंता रहेगी ही नहीं।

दादाश्री : यह विज्ञान ही ऐसा है कि चिंता नहीं होती। संसार में बीवी-बच्चों के साथ में रहने के बावजूद भी।

अहंकार निकालने की दवाई अर्थात् शरणागति

प्रश्नकर्ता : बिना शर्त गुरु की शरणागति को स्वीकार किया, ऐसा कब कहा जाएगा?

दादाश्री : शरणागति को स्वीकार किया कब कहा जाएगा कि जब हमें चिंता न हो, क्लेश न हो, तब ऐसा कहा जाएगा कि शरणागति को स्वीकार किया है। किसी भी संयोग में चिंता न हो, क्लेश नहीं हो। अंतर क्लेश बिल्कुल भी नहीं हो।

प्रश्नकर्ता : शरणागति की जो भावना है, उसका साधना में कुछ महत्व है या नहीं ?

दादाश्री : उसका महत्व इतना ही है कि शरणागति के बगैर अंहकार नहीं जा सकता। अंहकार निकालने की दवाई अर्थात् शरणागति लेकिन किनकी शरणागति? जिनका अहंकार चला गया है, उनकी। ऐसा नहीं चलेगा कि कहीं भी जाकर मुडंन करवा लें।

जो अंहकार ले लेते हैं, वे विराट पुरुष

प्रश्नकर्ता : अहंकार तो वही व्यक्ति निकाल सकता है न जिस व्यक्ति का अंहकार चला गया हो? और कौन निकाल सकता है?

दादाश्री : जो दूसरों का अंहकार ले लेते हैं, वे विराट पुरुष कहलाते हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या विराट के दर्शन होने पर अंहकार चला जाता है?

दादाश्री : अंहकार चला जाए ऐसा तभी कहा जाएगा न कि विराट स्वरूप के दर्शन हुए हो!

प्रश्नकर्ता : विराट के दर्शन होना यानी ज्ञान होना?

दादाश्री : विराट के दर्शन अर्थात् ज्ञानीपुरुष को पहचानना। सही अर्थ में विराट किसे कहते हैं कि जो हमारे अंहकार को भी खा जाएँ। जो हमारे अंहकार का भक्षण कर लें, उन्हें विराट कहते हैं! और उसका फल क्या आता है? वे हमें विराट बनाते हैं। विराट स्वरूप के बगैर कोई झुकता ही नहीं है न! कृष्ण भगवान ने अर्जुन को ऐसा विराट स्वरूप बताया था, तभी वह झुका था न, वर्ना तो नहीं झुकता था।

लाखों जन्मों में भी यह अहंकार जाए, ऐसी चीज़ नहीं है। तब एक व्यक्ति ने मुझसे कहा, 'आपने मेरा अहंकार ले लिया!' तो वही विराट पुरुष हैं! और पुस्तकों में विराट पुरुष खोजने जाते हो? जो हमारा अहंकार ले लेते हैं, वे विराट पुरुष हैं; इस दुनिया में और कोई विराट पुरुष कैसे हो सकता है

विराट स्वरूप किन्हें कहते हैं कि जिनमें बिल्कुल भी बुद्धि नहीं होती, नाम मात्र को भी बुद्धि नहीं होती। वे तो इधर-उधर से मारकर अहंकार को निकाल देते हैं जैसे टायर में से हवा निकालते हैं न! अत: जिनका अहंकार संपूर्ण रूप से चला गया हो, वे ही (किसी का अहंकार) ले सकते हैं। अत: जिनका खुद का अहंकार खत्म चुका है, वे ही ले सकते हैं। जिनका खुद का अहंकार खत्म हो चुका है, वही आत्मज्ञानी हैं। जो औरों का अहंकार ले लेते हैं, वही विराट पुरुष!

प्रत्यक्ष के बगैर कल्याण नहीं

प्रश्नकर्ता : इस तरह का समर्पण तो भगवान श्रीकृष्ण अथवा भगवान महावीर की कक्षा के हों तभी वे समर्थ कहलाएँगे न या फिर किसी भी साधारण व्यक्ति को करेंगे तो भी चलेगा?

दादाश्री : यदि आपको वे यों विराट पुरुष लगें तो करना। आपको लगे कि ये महान पुरुष हैं और उनके सभी कार्य विराट लगें तो हमें उन्हें समर्पण कर देना।

प्रश्नकर्ता : जो महान पुरुष हो चुके हैं, हज़ारों साल पहले हो चुके हैं, उन्हें हम समर्पण करेंगे तो समर्पण करना कहा जाएगा? उससे अपना विकास होगा या प्रत्यक्ष महापुरुष ही होने चाहिए?

दादाश्री : परोक्ष से भी विकास होता है और प्रत्यक्ष मिलें तब तो कल्याण ही हो जाता है। परोक्ष, विकास का फल देता है और प्रत्यक्ष के बिना कल्याण नहीं हो सकता। उन्हें समर्पण करने के बाद आपको कुछ भी नहीं करना होता। जैसे अपने यहाँ बालक जन्म ले, तब बालक को कुछ भी नहीं करना होता, उसी तरह समर्पण करने के बाद आपको कुछ भी नहीं करना होता।

तारणहार का मार्ग है प्रेम का

प्रश्नकर्ता : मुझे कुछ नहीं करना है न?

दादाश्री : आपको क्या करना है? आपने कर-करके तो यह किया है! वह सब ज्ञानीपुरुष कर देते हैं। डूबता हुआ व्यक्ति पूछे कि 'मैं क्या करूँ?' तैरूँ? अरे भाई, कोई तुझे तारे तो तरना, वर्ना तू तो डूब ही मरेगा। तारने वाला होना चाहिए, तारणहार होने चाहिए। कौन चाहिए? क्या डूबता हुआ इंसान पूछता है कि 'मैं क्या करूँ?' 'अरे, डूब रहा है, अब तैर न।' हम जब ऐसा कहें। तब वह कहता है, 'नहीं, मैं तो डूब रहा हूँ।' तब यदि तारणहार मिल जाए, तारने वाला तो.... बच जाता है और यदि तैरना न हो, जिसे तैरना अच्छा नही लगता हो, डूबना अच्छा लगता है तो डूब जाना चाहिए। डूबना तो सरल है। हमें क्या अच्छा लगता है उस पर निर्भर करता है।

प्रश्नकर्ता : हमें तो तैरना ही अच्छा लगेगा न?

दादाश्री : तैरना क्यों अच्छा लगेगा?

प्रश्नकर्ता : क्योंकि सभी को, सामान्य व्यक्ति को, किसी भी व्यक्ति को तैरना ही अच्छा लगेगा न!

दादाश्री : तो फिर पता लगाना चाहिए कि कोई तारने वाला है? जैसे कि नदी में तारने वाला मिल जाता है न? इसी प्रकार से इसमें भी यदि तारने वाला हो तो हम तर जाएँगे। जहाँ तारणहार हो वहाँ पर नियम वगैरह नहीं होता, वहाँ फीस नहीं होती। यदि तारणहार है और फीस लेता है तो उसे कहना कि 'नहीं भाई, ऐसे तारणहार मुझे नहीं चाहिए'। कोई कहे कि 'भाई, सौ रुपए फीस भर दो वे आपको तार देंगे' लेकिन बात यह है कि, 'क्योंकि वह फीस भरवाते हैं, इसलिए वह तार नहीं सकता, वह डूबा देगा।

जहाँ प्रेम नहीं दिखाई दे, वहाँ मोक्ष का मार्ग ही नहीं है। जहाँ फीस होती है वहाँ प्रेम नहीं होता।

तारणहार का मार्ग प्रेम का मार्ग है। भगवान के प्रति प्रेम का मार्ग है और तारणहार तो खुद ही भगवान बनकर बैठे हैं, खुद तरकर बैठे हैं। वे मोक्ष का दान देने के लिए आए हैं।

आप जिन्हें बुद्धि समर्पित करते हो तब, उनमें जो शक्ति होती है, वह आपको प्राप्त हो जाती है। जिन्हें समर्पित किया, उनका सब कुछ हमें प्राप्त होता है। जैसे कि एक टंकी के साथ दूसरी टंकी को ज़रा पाईप से जोइन्ट करें न, तो एक टंकी में चाहे जितना माल भरा हुआ हो लेकिन दूसरी टंकी में भी उतना ही लेवल आ जाता है। समर्पण भाव उस जैसा कहलाता है।

जीवंत विराट पुरुष को ही समर्पण

प्रश्नकर्ता : तो हम जिस स्वरूप को समर्पित करते हैं, क्या उनके गुण हममें आ जाते हैं, समर्पण से?

दादाश्री : समर्पण करने के बाद हमारी बहुत ज़िम्मेदारी नहीं रहती, उसके बाद उनकी ज़िम्मेदारी है। तब फिर हमें कहना है, 'साहब, इतना समर्पण किया तो भी मेरा कुछ नहीं हो रहा!' तब साहब पूछते हैं, 'तूने समर्पण किया,

हमने जो आज्ञा दी है उसका पालन करता है या नहीं?' तब वह कहता है, 'साहब, आज्ञा तो मुझे समझ में नहीं आई।' तब वे कहते हैं, 'पहले समझ ले और उसके बाद पालन करना। तेरा कल्याण हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : तो इस प्रकार का समर्पण तो जीवंत व्यक्तियों के प्रति ही हो सकता है न?

दादाश्री : हाँ, जीवंत व्यक्तियों के प्रति ही, अन्य किसी को करने का कोई अर्थ ही नहीं है और जीवंत व्यक्तियों में भी, अगर नीम के पेड़ को करोगे तो उससे फायदा नहीं होगा क्योंकि जिन्हें समर्पित करते हैं, वह खुद ही नहीं समझता है। समर्पित करने के बाद ज़िम्मेदारी कौन ले सकता है? जो समझता है, वही लेगा। नीम ले सकता है क्या? फिर क्या-गाय-भैंसें ले सकती हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो घोड़े-गधे? तो क्या ये सामान्य व्यक्ति ले सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो जो तद्रूप होंगे, वे ही ले सकते हैं और उन्हीं को समर्पित हो सकते हैं। यदि वे आपको विराट पुरुष लगें तो समर्पण करना, वर्ना समर्पण करने का कोई अर्थ नहीं है। समर्पण किसे करना है? जो 'ठेठ' तक की अपनी ज़िम्मेदारी ले उन्हें, जो तथारूप (तद्रूप) हो उन्हें समर्पण करना है।

ज्ञानी को समर्पित होने से, अहम् शून्यता

लाखों जन्मों तक नंगे (संसार त्यागकर साधु) होने पर भी संसार का मोह नहीं छूटता। अहंकार कभी भी विलय नहीं होता। अहंकार ऐसा नहीं है कि फ्रैक्चर हो जाए, ममता नहीं जाती है और माया तो कभी दूर ही नहीं जाती। एक आम हो तो, उसे भी रात को छिपाकर रख देता है। कहेता, 'सुबह खाऊँगा'। जगंल में रहने पर भी माया साथ में ही रहती है! अत: यह तो लिफ्ट मार्ग निकला है! आपका पुण्य है इसीलिए हम मिले हैं। यह तो सरल मार्ग है! अत: 'यहाँ आप अपना काम निकाल लो', इतना कह देते हैं।

यह अक्रम विज्ञान है! अक्रम अर्थात् त्याग वगैरह कुछ भी नहीं करना है, यहाँ पर अर्पण ही कर देना है। तो बस! फिर हो गया! समर्पण से ही मोक्ष है।

प्रश्नकर्ता : इस अक्रम मार्ग में, जो इगोइज़म है, उसे ज्ञानीपुरुष को सरेन्डर (समर्पण) करने से इगोइज़म चला जाता है न?

दादाश्री : वह तो सेकेन्डरी स्टेज (दूसरा चरण) हुई लेकिन सब से पहले, ज्ञानीपुरुष को अपना इगो किसे सरेन्डर करना होता है? ज्ञानीपुरुष का सारा इगोइज़म ज्ञान से ही खत्म हो जाता है। ज्ञान प्रकट होते ही इगोइज़म खत्म हो जाता है। हममें बहुत इगोइज़म था, 1958 (उन्नीसौ अठावन) से पहले बहुत इगोइज़म था लेकिन ज्ञान होते ही सारा इगोइज़म खत्म हो गया।

अब, आप जब यहाँ सब कुछ समर्पण करते हो, तब इगोइज़म चला जाता है। ज्ञान मिलने के बाद आपको भी डिप्रेशन या एलिवेशन नहीं होता है और यदि कोई डाँटे या जेल में डाल दे तब भी डिप्रेशन नहीं आए, उसे विज्ञान कहते हैं, यह वैज्ञानिक रास्ता है।

ज्ञानी के चरणों में अहंकार की मुक्ति

प्रश्नकर्ता : इस मार्ग पर जाने के लिए ज्ञानी के चरणों में बैठना चाहिए, वह रास्ता है?

दादाश्री : ज्ञानी स्वयं मुक्त हैं इसलिए आपको भी मुक्त कर सकते हैं। संसार की किसी

भी चीज़ में वे नहीं रहते इसलिए आपको भी सर्व प्रकार से मुक्त कर सकते हैं। जिनको भजते हैं, उस रूप होते जाते हैं।

जहाँ अहंकार नहीं होता है, वहाँ पर बैठे रहने से आपका अहंकार चला जाता है। अभी आपके मन में ऐसा है कि लाओ, 'दादा के पास बैठा रहूँ', लेकिन पिछले जो संस्कार है, 'डिस्चार्ज' संस्कार हैं, उनका निबेड़ा तो लाना पड़ेगा न? जैसे-जैसे उनका निबेड़ा आता जाएगा, वैसे-वैसे इसकी प्राप्ति होती जाएगी। भावना तो यही रखनी है कि निरंतर ज्ञानी के चरणों में ही रहना है। फिर संपूर्ण मुक्ति हो जाती है। अहंकार की मुक्ति ही हो जाती है!

ज्ञानीपुरुष के सामने हाथ जोड़ना उसका अर्थ यही है कि व्यवहार अहंकार को शुद्ध किया और उनके अँगूठे पर मस्तक लगाकर यथार्थ दर्शन किए, उसका अर्थ है अहंकार अर्पण किया। जितना अहंकार अर्पण होता है, उतना ही काम बन जाता है।

समर्पण किसे कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : समर्पण की भावना उत्पन्न करने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : पहले यह जान लेना चाहिए कि समर्पण की भावना उत्पन्न करने के लिए किस-किस प्लेटफॉम पर जाना पड़ता है। किस प्लेटफॉम पर समर्पण हो सकता है? जिन्हें अरबों रुपए दु:खदायी लगते हों, सुदंर स्त्रियाँ भी दु:खदायी लगती हों, सुदंर बच्चे भी दु:खदायी लगते हों, सुदंर बंगला भी दु:खदायी, गाड़ियाँ, मोटरें सब कुछ दु:खदायी लगें, यह प्लेटफॉर्म उनके लिए है। उसे भगवान ने समर्पण कहा है।

प्रश्नकर्ता : समर्पण किसे कहते हैं?

दादाश्री : चाहे श्रीखंड खाना लेकिन टेस्ट (स्वाद्) नहीं लेना, उसे समर्पण कहते हैं। श्रीखंड बनाकर मुझे समर्पित करने के बाद आपको खाना है लेकिन उसमें से टेस्ट नहीं लेना है। श्रीखंड ऐसा नहीं कहता कि आप टेस्ट लो ही।

प्रश्नकर्ता : हाँ!

दादाश्री : यदि टेस्ट लेना है तो लो और नहीं लेना है तो मत लो। जैसे लेना हो, वैसे लो।

प्रश्नकर्ता : दादा, हम श्रीखंड का टेस्ट लेते हैं तो फिर उसका 'पेमेंट' भी (चुकाना) करना पड़ता है न?

दादाश्री : वास्तव में तो लेना ही नहीं चाहिए। समर्पण करने के बाद नहीं ले सकते और यदि लोगे तो बाद में मार खाओगे। बाकी, श्रीखंड बाधक नहीं है। समर्पण करने के बाद श्रीखंड बाधाक नहीं है। यदि टेस्ट लोगे तो बाधक होगा।

प्रश्नकर्ता : समर्पित कब कहलाता है?

दादाश्री : समर्पित अर्थात् उनके कहे अनुसार तो करना पड़ेगा न? परहेज करना, बाकी कुछ नहीं करना है। यह समर्पण का मार्ग ही है। कहा हो कि 'भाई इतना परहेज रखना' उतना तो करना है।

ज्ञानसहित समर्पण, वही भक्ति है

प्रश्नकर्ता : क्या आत्मसाक्षात्कार के लिए भक्ति या योग का कुछ महत्व है?

दादाश्री : ज्ञान के बगैर भक्ति नहीं हो सकती। संसार में लोग जिसे भक्ति कहते हैं, वे सब भजन हैं। वह भक्ति नहीं है। पूर्वजन्म का ज्ञान और ज्ञान के इशारे से भक्ति है। अर्थात् लोग भक्ति को लौकिक में ले आते हैं। ज्ञान के बगैर कभी भी भक्ति नहीं हो सकती। भक्ति उस रूप बना देती है। जिनकी भक्ति करते हैं उन जैसा बना

देती है। दादा की भक्ति करते हुए आप उनके जैसे ही बनते जाओगे। भक्ति तो बहुत उच्चतम चीज़ है लेकिन लोग समझते नहीं है और वे भजन को ही भक्ति कहने लगे। अरे! मजीरा बजाने को भी भक्ति कहते हैं। मजीरा बजाने को भक्ति कहते हैं या नहीं? वास्तव में उसका अर्थ भक्ति नहीं है। उसका क्या मिनिंग (अर्थ) है? अगर उसका मूल अर्थ प्राप्त करना हो तो ज्ञान प्राप्ति के बाद ही यथार्थ भक्ति हो सकती है। अज्ञान दशा में भक्ति कैसी होती है?

प्रश्नकर्ता : गीता में ऐसा कहा है कि भक्त को सहज रूप से ही ज्ञान हो जाता है।

दादाश्री : हाँ, भक्तों को सहज रूप से ही ज्ञान हो जाता है लेकिन भक्त किसे कहेंगे? वह समझने जैसा है।

इस संसार में जिन लोगों को हम भक्त कहते हैं, वे भक्त हैं ही नहीं। ज्ञान होने के बाद ही भक्त कहलाते हैं। कहीं संपूर्ण ज्ञान होने के बाद नहीं। संपूर्ण ज्ञान होने के बाद तो ज्ञानी बन जाते हैं लेकिन कुछ अंश तक ज्ञान प्राप्त होने के बाद, तभी से उसे भक्ति रहती है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् ज्ञानसहित समर्पण को भक्ति कहा जाता है?

दादाश्री : हाँ, ज्ञानसहित समर्पण को। ज्ञानसहित समर्पण बहुत उच्च प्रकार की भक्ति कहलाती है और यदि अज्ञानसहित भी समर्पण किया जाए, तब भी भक्ति कहलाती है। समर्पण ही भक्ति है।

समर्पण का यथार्थ अर्थ

प्रश्नकर्ता : हम जो दादा को समर्पित होते हैं, उस समर्पण का अर्थ क्या है?

दादाश्री : समर्पण करने का अर्थ यही है कि ये गलत मान्यताएँ आपको दे रहे हैं। अभी तक की गलत मान्यताएँ दे रहा हूँ और मुझे आप सही मान्यता दीजिए।

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं, यों समर्पण का सादा अर्थ तो सभी जानते ही हैं। समर्पण यहाँ पर जो महात्मा भी करते हैं, वे आपको जो कुछ भी समर्पित करते हैं, वह परमानेन्ट (हमेशा) होना चाहिए। उसके बाद आप उन्हें कहते हैं कि 'आपको जहाँ जाना हो, वहाँ जाओ। आप जिन्हें मानते हो उन्हें मानो, मुझे कोई हर्ज नहीं है,' तो ऐसा क्यों?

दादाश्री : इस प्रकार से हम छूट दें तो उसमें कोई हर्ज नहीं है न! हम आपसे कह देते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो फिर उसमें सामने वाले व्यक्ति की तरफ से समर्पण कहाँ हुआ?

दादाश्री : नहीं! वह तो हो गया इसीलिए तो हम छूट देते हैं। अन्य कहीं पर कोई छूट नहीं देता। अन्य कहीं पर तो बाँधकर रखते हैं। यहाँ पर तो हम आपको छूट देते हैं क्योंकि इतने दु:खी काल में लोगों को जानवर की तरह बाँधने का क्या अर्थ है?

आप मुझे क्या समर्पित करते हो? जिससे आपको भ्रांति उत्पन्न होती थी, उस भ्रांति के कारणों को, भ्रांति और भ्रांति का फल, आप मुझे वह सब समर्पित कर देते हो इसलिए आप शुद्धात्मा बन जाते हो।

जो अपना नहीं था, उसे अपना माना था, वह सब समर्पित कर देना चाहिए न? उन रोंग बिलीफों को समर्पित कर देते हो, और मैं आपको राइट बिलीफ दे देता हूँ। रोंग बिलीफ अर्थात् मिथ्यादर्शन और राइट बिलीफ अर्थात् सम्यक्दर्शन।

यहाँ पर अर्पण करना है भगवान को

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने से पहले जो अर्पण विधि करवाते हैं न, एक्चुअली (वास्तव में) वह गलत है क्योंकि यदि पहले किसी गुरु को अर्पण कर दिया हो, उसके बाद फिर से अर्पण विधि करते हैं। जो अपने पास न हो, उसे अर्पण करना ठीक नहीं कहलाएगा न।

दादाश्री : कोई अर्पण विधि करवाता ही नहीं है न! गुरु तो अर्पण विधि करवाते ही नहीं हैं। जब तक गुरु में अहंकार है, तब तक किसी की अर्पण विधि नहीं करवा सकते। वे नमस्कार करते हैं, 'मैं आपका शिष्य बन गया' ऐसा कहते हैं तो थोड़े ही (कुछ) अर्पण होता है। यहाँ तो क्या-क्या अर्पण करना है? आत्मा के अलावा सब कुछ। कोई सब कुछ अर्पण करता ही नहीं है न! अर्पण होता भी नहीं है। कोई भी गुरु ऐसा नहीं कहेगा क्योंकि वह बेचारा भी अहंकारी होता है न! वह तो आपको मार्ग दिखाता है। वह गाइड (मार्गदर्शक) के रूप में काम करता है। हम गुरु नहीं हैं, हम तो ज्ञानीपुरुष हैं और यह मुझे अर्पण नहीं करना है, भगवान को अर्पण करना है।

जो हार्टिली है, उसका सब कुछ समर्पित ही है

प्रश्नकर्ता : आपको किस तरह से सब कुछ समर्पित कर सकते हैं?

दादाश्री : यदि आप हमारे साथ हार्टिली रहते हो तो हम समझ जाते हैं कि आपने सब कुछ हमें अर्पण और समर्पण कर ही दिया है। बीच में भेद नहीं रखा, बीच में परदा नहीं रखा तो हम जान जाते हैं कि आपने समर्पण कर ही दिया है। हमारे साथ भेद नहीं रखते हो इसका मतलब हो सके उतना हम पर प्रेमभाव रखते हो। सभी ने मुझे समर्पित किया ही है। जो खरे इंसान हैं, वे समर्पित करके ही चलते हैं। यानी कि वे तो सीख ही चुके होते हैं।

समर्पण किसे कहते हैं? खुद आत्मभाव में जीकर देहभाव में मर जाना। अर्थात् चाहे कुछ भी किया जाए फिर भी अलग नहीं होते! और अगर वे आपको परेशा करें तो? आप अलगपन नहीं रखते लेकिन अलग बोल देते हो। समर्पण विधि अर्थात् खुद का अस्तित्व ही नहीं रहता। मन-वचन-काया से उनके पास ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी के पास जीते जी मर जाना ही समर्पण है?

दादाश्री : हाँ, ज्ञानी के पास अलग से 'मैं पना,' जुदाईपन नहीं रहती।

हैं 'निमित्त', फिर भी 'सर्वस्व'

प्रश्नकर्ता : जो लोग दादा के चरणों में समर्पित हो गए, उन्हें आत्मा प्राप्त हो ही जाएगा न?

दादाश्री : हाँ, उनका तो काम ही निकल जाएगा न!

प्रश्नकर्ता : इसमें आप निमित्त तो हैं ही न?

दादाश्री : हाँ, निमित्त तो हैं न! हम तो खुद ही आपसे कहते हैं न कि हम तो निमित्त हैं। मात्र निमित्त! लेकिन यदि आप निमित्त मानोगे तो आपका नुकसान होगा क्योंकि उपकारी भाव चला जाएगा। जितना उपकारी भाव उतना ही अधिक परिणाम प्राप्त होगा। उपकारी भाव को भक्ति कहा गया है।

प्रश्नकर्ता : आपको निमित्त मानने से उपकारी भाव चला जाएगा, वह समझ में नहीं आया।

दादाश्री : हम तो आपसे कहते हैं कि हम निमित्त हैं, लेकिन यदि आपने निमित्त माना तो

आपको लाभ नहीं मिलेगा। आप उपकार मानोगे तो परिणाम मिलेगा। यह नियम है इस दुनिया का लेकिन ये निमित्त ऐसे हैं जो मोक्ष में ले जाएँगे। इसलिए महानतम् उपकार मानना। वहाँ पर अर्पण करने के लिए कहा है। सिर्फ उपकार ही नहीं मानना है बल्कि पूरी तरह से मन-वचन-काया अर्पण कर देना है। सर्वस्व अर्पण करने में देर ही नहीं लगे, ऐसा भाव आ जाना चाहिए।

वीतरागों ने भी कहा है कि 'ज्ञानीपुरुष तो ऐसा कहते हैं कि 'मैं तो निमित्त हूँ' लेकिन मुमुक्षु को खुद को, ऐसा नहीं मानना चाहिए कि वे निमित्त हैं। मुमुक्षुओं को कभी भी निमित्त भाव नहीं दिखाना चाहिए कि 'अहो, आप तो निमित्त हैं। इसमें आप क्या करेंगे?' 'वे ही हमारे सर्वस्व हैं', ऐसा कहना है वर्ना कहा जाएगा कि 'व्यवहार चूक गए'। आपको तो ऐसे कहना है, 'मोक्ष में ले जाने वाले वे ही हैं', और ज्ञानीपुरुष ऐसा कहें कि, 'मैं निमित्त हूँ', दोनों का व्यवहार इस तरह का होना चाहिए।

परम विनय ही संपूर्ण समर्पण है

जिनमें परमात्मा व्यक्त हो चुके हैं, ऐसे 'ज्ञानीपुरुष' को पूर्ण रूप से अर्पित हो जाना है। वहाँ अपना आत्मा, आत्मस्वभाव में और शरीर परम विनय में रहता है।

परम विनय अर्थात् ग्रहण करते रहना। पूज्य लोगों का *राजीपा* (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता) प्राप्त करना। फिर भले ही वे मारें-कूटें लेकिन वहीं पर पड़े रहना! अविनय के सामने विनय रखना, उसे गाढ़ विनय कहते हैं और अविनय से दो थप्पड़ मार दें, तब भी विनय रखना, उसे परम अवगाढ़ विनय कहते हैं। यह परम अवगाढ़ विनय जिसे प्राप्त हो गया, वह मोक्ष में जाता है। उसे सद्गुरु या और किसी की भी ज़रूरत नहीं है। स्वयं बुद्ध बनेगा, उसकी मैं गारन्टी देता हूँ।

परम विनय अर्थात् ये दादा ही ज्ञानीपुरुष है और वे ही मुझे मोक्ष में ले जाएँगे, पूर्ण विश्वास से, भरोसे से ऐसा माने तो उसी को परम विनय कहते हैं। परम विनय यानी संपूर्ण समर्पण।

खुद के सयानेपन से चलेने से हो जाती है गड़बड़

प्रश्नकर्ता : आप रास्ता बताते हो लेकिन उस रास्ते से हमें नहीं चलना हो तो क्या होगा?

दादाश्री : नहीं चलें, ऐसा हो सकता है, लेकिन जाने के लिए खुद की इच्छा चाहिए। खुद को नहीं जाना हो तो, वह उल्टे रास्ते जाएगा, लेकिन खुद को जाना ही है और दूसरे कर्म अंतराय डालते हों तो उसमें हर्ज नहीं है। खुद को जाना है, ऐसा तय हो तो 'ज्ञानीपुरुष' के आशीर्वाद काम करते रहते हैं। लाख कर्म आएँ फिर भी 'ज्ञानीपुरुष' की कृपा से वे उखड़ जाएँगे लेकिन जिन्हें खुद को ही टेढ़ा करना हो, उसका उपाय नहीं है।

जो खुद के ही सयानेपन से आगे बढ़ रहा है, वह कभी भी मोक्ष तो नहीं पा सकेगा क्योंकि सिर पर कोई *ऊपरी* (बॉस) नहीं है। जब तक सिर पर कोई गुरु या ज्ञानी नहीं हों, तब तक क्या कह सकते हैं? स्वच्छंद! जिसका स्वच्छंद रुके उसका मोक्ष होता है। यों ही मोक्ष नहीं हो जाता।

रोके जीव स्वच्छंद तो पाए अवश्य मोक्ष

लोगों ने तो फिर स्वच्छंद निकालने के लिए खुद ही उपाय किए! तब फिर कृपालुदेव ने दूसरा वाक्य क्या कहा?

''प्रत्यक्ष सद्गुरु के योग से, स्वच्छंद को रोक सकते हैं। अन्य उपाय करने से, प्राय: दो गुना हो जाता है।''

अन्य उपाय क्या है? हाँ, यदि तू अपने आप स्वच्छंद निकालने जाएगा तो स्वच्छंद नहीं

जाएगा। यदि खुद ही कुछ उपाय करने गया तो, वह दो गुना हो जाएगा, ऐसा कहते हैं। प्रत्यक्ष सद्गुरु के अलावा अन्य कोई उपाय करने से प्राय: दो गुना हो जाता है लेकिन मैं तो बीस गुना कहता हूँ। अभी मंहगाई है न! इसलिए यह स्थिति हो गई है।

स्वच्छंद चला जाए तो खुद ही खुद का कल्याण कर सकता है लेकिन यदि खुद स्वच्छंद निकालने जाएगा तो निकल नहीं पाएगा न! स्वच्छंद को पहचानना तो होगा न! तू जो कुछ करता है वह स्वच्छंद ही है। कृपालुदेव ने कहा था कि 'सजीवन मूर्ति के *लक्ष* (जागृति) के बिना जो कुछ भी किया जाता है, वह जीव के लिए बंधन है, यही बात हमारा हृदय है। जो कुछ भी किया जाए, वह बंधन है, वही स्वच्छंद है।' एक बाल के बराबर किया तो भी स्वच्छंद ही है। व्याख्यान में जाए या साधु बन जाए या तप-त्याग करके शास्त्र पठन करे, वह सब कुछ स्वच्छंद ही है। तू जो भी क्रिया करे, वह ज्ञानीपुरुष से पूछकर करना वर्ना वह स्वच्छंद क्रिया कहलाएगी उससे तो बंधन में पड़ जाएगी।

स्वच्छंद तुड़वाता है समर्पणता

स्वच्छंद नामक रोग क्या करता है? वह शंका करवाता है, ज्ञानीपुरुष के सामने समर्पित होने की बुद्धि उत्पन्न नहीं होने देता। उसका क्या कारण है? पुस्तक या शास्त्र पढ़े हों और उनसे जो जाना हो, उससे स्वच्छंद उत्पन्न होता है। वह बैक (पीछे) रखेगा। वह जो स्वच्छंद है न, वह अकड़ करवाता है। ऐसा सब तरह-तरह का दिखाता है। उससे बल्कि रोग क्रोनिक (हठीला) हो जाता है। अकड़ना समझ में आया आपको?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ। समझ में आया।

दादाश्री : सरलता अर्थात् उसे जैसे मोड़े वैसे मुड़ जाता है जबकि स्वच्छंद तो मुड़ने ही नहीं देता इसलिए इतना बदलाव करना पड़ेगा। अकड़ और शंका, यदि वे दोनों आ जाएँ न, 'तब कहना, 'बहुत दिन हो गए, अब आप चले जाओ भाई, बहुत दिनों तक शंका करवाई, अब हमें आपसे विरुद्ध ही करना है, आपका कहना नहीं मानना है। और अकड़ से हमें कह देना है कि 'बहुत दिनों तक अकड़ की, अब मेरे पास ज्ञानीपुरुष की आज्ञा है उनके अनुसार मुझे समर्पण कर देना है।' इस प्रकार यदि ये दो वाक्य कहते रहेंगे तो लेवल में रह सकेंगे।

अरे! यहाँ से घर जाएगा तो शंका होगी। और यदि कोई बाहरी व्यक्ति आ गया० तो वह शंका बढ़ा देगा कि 'ऐसा तो नहीं होता। आप यहाँ कहाँ आ फँसे?' अत: ज्ञानीपुरुष से आत्मज्ञान प्राप्त करने के बाद, ज्ञान फलदायी होने के बाद, आपको किसी से बात करनी तब तक गुप्त रखना। वर्ना वे आपको शांति से नहीं बैठने देंगे और यहाँ ज्ञानीपुरुष के पास भी नहीं आने देंगे।

प्रश्नकर्ता : शंका छुड़वाना तो अपने हाथ की बात है।

दादाश्री : हाँ, वह बात ठीक है लेकिन मेरा क्या कहना है कि आपको सावधान रहना है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या ऐसा कर देंगे कि मुझ में स्वच्छंदता आए ही नहीं।

दादाश्री : आपकी ऐसी भावना है इसलिए मैं 'विधि' कर दूँगा लेकिन इस रोग के बारे में बता देता हूँ। इस रोग को निकालने के लिए यहाँ पर 'विधि' करूँगा, तब शक्ति माँग लेना कि 'मेरा सारा स्वच्छंद आप ले लो।' आपको ऐसा माँगना है और मैं भगवान से कह दूँगा कि इनका हल ला देना।

ज्ञानीपुरुष तो पूरे वर्ल्ड के आश्चर्य कहलाते

हैं! जो किसी भी चीज़ के भिखारी नहीं हैं, ऐसे ज्ञानीपुरुष के पास जाकर समर्पण करना तो काम हो जाएगा। बस, इतना ही कहना चाहते हैं और उनके कहे अनुसार करना है, उनकी आज्ञा के बाहर तो चलना ही नहीं है।

ऐसे प्रकट पुरुष शायद ही कभी होते हैं! वर्ना, प्रकट हो नहीं सकते न! ऐसा तो शायद ही कभी होता है। जब बहुत पुण्य जागे, तभी वे मिलते हैं। आपका कितना जबरदस्त पुण्य है वर्ना ऐसा तो होता ही नहीं है न!

बुद्धि को करना है अर्पण

प्रश्नकर्ता : बुद्धि इस तरह चल रही थी इसलिए मैंने सोचा, 'आज इस बुद्धि को दादा के चरणों में सौंप देना है' इसलिए आज मैंने इस बुद्धि को आपके चरणों में रख दी।

दादाश्री : हाँ, बहुत अच्छा किया। यही एक ऐसा सत्संग है कि जहाँ बुद्धि को समर्पित कर देते हैं। वर्ना अन्य किसी जगह पर तो कोई बुद्धि को समर्पित करता ही नहीं न! इसी आधार से तो उनकी गाड़ी चलती हैं।

प्रश्नकर्ता : हम सभी बुद्धिवादी और बुद्धिजीवी हैं। बुद्धिशाली भी नहीं हैं।

दादाश्री : ठीक है। आपकी बुद्धि ऐसी है लेकिन ज्ञानीपुरुष तो बुद्धि रहित होते हैं, ऐसे ज्ञानीपुरुष के पास जब अर्पण हो जाए, बुद्धि समर्पित हो जाए, तब धीरे-धीरे खुद की बुद्धि चली जाती है। वर्ना बुद्धि नहीं जाती है बल्कि, बखेड़ा किया करती है।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि वापस नहीं घुसती है। वह उछलती रहती थी लेकिन अब कहना मानने लगी है। उससे कहता हूँ कि बिंदु की तरह मत रह, सागर में आ जा।

दादाश्री : हाँ, अर्पण कर देना। ठीक है, अर्पण कर दो।

प्रश्नकर्ता : तो फिर बुद्धि वापस कहना मानने लगती है।

दादाश्री : नहीं! वह तो ऐसा है न कि अर्पण करने के बाद भी उसका कुछ ही भाग अर्पण हो जाता है और फिर वापस जकड़ लेती है इसलिए हमें ऐसा भाव ही रखना है। बुद्धि से ऐसा कहना है कि 'तूने बहुत उपकार किया है इसलिए तुझे मुक्त कर देते हैं। तुझे जो कुछ भी चाहिए वह माँग ले। कभी न कभी तो तुझे मुक्त होना ही पड़ेगा।' हम किस तरह से अबुध बने? अबुध तो इसी तरह से बनना पड़ेगा, अबुद्ध बने बगैर कोई चारा ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : मैंने बुद्धि एक तरफ रख दी है।

दादाश्री : बुद्धि को एक तरफ रख देने से तो यह संसार बहुत अच्छी तरह से चलता है। ज्ञान प्रकट हुआ, ऐसा कब कहा जाएगा? जब वीतरागता आएगी तब। वीतरागता कब आती है? जब बुद्धि का अभाव हो जाता है तब। उसके सारे कनेक्शन मिलने चाहिए न? अपना यह ज्ञान ही ऐसा है कि धीरे-धीरे हम उस पर दृष्टि रखेंगे तो वह सब विलय होता रहेगा। अपने महात्मा तो बुद्धि की मोमबत्ती से देखते हैं। अरे! इससे (ज्ञान से) देखो न! यह स्व-पर प्रकाशक है!

पूज्यता न टूटे वही समर्पण का सार

हम तो कहते हैं कि गुरु बनाओ तो सोच-समझकर बनाना फिर पागल-बावरे निकलें फिर भी तुझे उनका पागलपन नहीं देखना है। जिस दिन तूने गुरु बनाए थे, फिर गुरु को वैसा ही देखना है। हम वही दृष्टि रखें, जिस दृष्टि से प्रथम बार देखा था। वर्ना यह तो भयंकर अपराध कहा जाएगा।

हमने खुद एक पेड़ लगाया हो और वहाँ पर हमें ही रेल्वे लाइन डालनी हो और पेड़ रेल्वे के बीच में आ रहा हो और यदि काटने का अवसर आए तो मैं कहूँगा कि, 'मैंने लगाया है, मैंने पानी से सींचा है इसलिए रेल्वे लाइन घुमा दो लेकिन पेड़ मत काटना।' यदि मैंने एक महाराज के पैर छुए हों तो फिर वे चाहे जो भी करें फिर भी मैं मेरी दृष्टि नहीं बिगाड़ूँगा क्योंकि वे तो कर्माधीन हैं। जो कुछ भी दिखाई देता है वह सारा ही कर्माधीन है। मैं जान जाता हूँ कि इन्हें कर्म के उदय ने घेर लिया है इसलिए दूसरी दृष्टि से ऐसा-वैसा कुछ नहीं देख सकते। यदि पेड़ काटना था तो उसे पालना-पोसना नहीं था, और पाला-पोसा है तो काटना मत। शुरू से ही यह हमारा सिद्धांत है! आपका सिद्धांत क्या है? समय आए तो काट देंगे, बिना सोचे-समझे?

अर्थात् जिन्हें पूजते हैं, उन्हें उखाड़ मत देना। वर्ना फिर जिन्हें पूजा है, चालीस सालों तक पूजा की है और इकतालीसवें साल में हटा दें, काट दें तो चालीस सालों का तो गया और ऊपर से दोष लगेगा।

आप 'जय-जय' मत करना और अगर करो तो उसके बाद पूज्यता नहीं टूटनी चाहिए। वह नहीं टूटे, वही इस जगत् का सार है! इतना ही समझना है।

जिसकी दृष्टि नहीं बदलती उसका कल्याण हो जाता है

कृपालुदेव ने यह सलाह दी है। क्या कहा है? सत्पुरुष ही परमात्मा है, देहधारी परमात्मा! जब तक ऐसा नहीं मानेंगे, तब तक आपका कल्याण नहीं होगा।

यदि ज्ञानीपुरुष को सन्निपात हो जाए, वे लोगों को काटें, पत्थर से मारें या गालियाँ दें फिर भी उनमें परमात्मापन है, ऐसा मत भूलना, ऐसा कहते हैं। क्या कहा है? उनका आचार मत देखना।

किसी भी स्थिति में, उनका कोई भी आचार मत देखना। जब सन्निपात होता है तब शरीर क्या करता है? गाली देता है, काटता है। कृपालुदेव ने यह बहुत बड़ा वाक्य लिखा है। उस समय जिसकी दृष्टि नहीं बदलती, उसका कल्याण हो जाता है। बाकी, यदि दृष्टि बदल गई तो जो भोले लोग होते हैं न, वे भोले लोग वहाँ पर मार खा जाते हैं। भोले लोग क्या करते हैं?

प्रश्नकर्ता : मार खा जाते हैं, विराधना कर देते हैं।

दादाश्री : इसीलिए तो कृपालुदेव ने लिखा है कि यह देह किसके अधीन है? आत्मा अभी किसके अधीन है? यह देह की पैकिंग है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : देह की पैकिंग उदय के अधीन बदलती ही रहती है। मन उदय के अधीन, वाणी उदय के अधीन, उसमें हाथ ही मत डालना। आपने जिस स्वरूप के दर्शन किए हों, जिस स्वरूप के प्रति आपने समर्पण किया है, उस स्वरूप को कभी भी मत भूलना।

संपूर्ण समर्पण होने पर चित्त बनता है दादामय

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद संपूर्ण समर्पण कैसे होता है?

दादाश्री : यदि मेरे बगैर चैन न पड़े तो समर्पण बढ़ता जाएगा। दादा याद आते रहें और लगे कि यहाँ पर हो तो बहुत अच्छा है, ऐसा सब होता रहे, तब समर्पण बढ़ता जाएगा। काम-धंधा तो चलता ही रहेगा। कोई काम नहीं रुकेगा।

प्रश्नकर्ता : विरह उत्पन्न होता है, तभी समर्पण होता है?

दादाश्री : नहीं, विरह अलग बात है। विरह तो अग्नि है, अग्नि अर्थात् सहन नहीं होती। व्यक्ति दौड़कर यहाँ मुंबई आ जाता है। विरह अग्नि है। लेकिन यह तो कैसा है? दाल-चावल-सब्ज़ी बनाती है, पूरनपूरी बनाती है, पकौड़े बनाती है, सब डालती है, कढ़ी में सब डालती जाती है इसके बाबजूद भी, यदि उसके पति ऑफिस गए हों तो, उसे पति ही याद आते रहते हैं। उसे चित्त में कौन रहता है?

प्रश्नकर्ता : पति।

दादाश्री : चित्त पति में ही रहा करता है। इस तरह से लोगों को उदाहरण देता हूँ कि अगर चित्त इस तरह से रहता हो फिर उस स्त्री का खाना फर्स्ट क्लास बनेगा। लोग कहेंगे कि 'यदि उसका चित्त वहीं के वहीं रहेगा तो यहाँ संसार बिगड़ जाएगा' लेकिन उस बात में कोई दम नहीं है।

प्रश्नकर्ता : जो कार्य कर रहे हों, उसी में चित्त रखना चाहिए। अन्य कहीं पर चित्त हो तो काम बिगड़ जाएगा।

दादाश्री : नहीं, कार्य तो स्थित हो ही चुका है और यदि चित्त वहाँ रहेगा न तो हर एक कार्य सहज है। कार्य किस तरह से होता है? सहज। अर्थात् आपको तो चित्त ऑफिस में रखना पड़ता है न, तो क्या उसे कढ़ी में कम रखना पड़ता होगा? मिर्च कहाँ रखी है, नमक कहाँ रखा है, फलाना कहाँ रखा है, क्या डालना है, क्या नहीं डालना, वह सब कढ़ी बनाने में क्या कुछ कम काम है?

प्रश्नकर्ता : तो फिर खाना बिगड़ते समय क्या होता है?

दादाश्री : नहीं बिगड़ेगा। जिस दिन उसका चित्त अपने पति में है उस दिन खाना नहीं बिगड़ेगा। अगर चित्त अन्य जगह पर चला जाए तभी खाना बिगड़ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यदि चित्त अन्य जगह पर चला गया न तो खाना बिगड़...

दादाश्री : आपने जो प्रश्न पूछा वह अलग है। मैं उस प्रश्न का जवाब देना चाहता हूँ लेकिन आप उसे दूसरे रास्ते पर ले जा रहे हो। मैं यह सिमिलि (उदाहरण) दे रहा हूँ ताकि आपका काम सरल हो जाए और दादा में ही चित्त रहे। यहाँ पर आपका काम सरल हो जाएगा। आपको बोझ नहीं लगेगा और कार्य होता रहेगा। आपको थोड़ा-बहुत ऐसा होता है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा ही हैं।

दादाश्री : तो फिर ऐसा कह दो ताकि सभी को पता चल जाए न!

वहाँ दादा हाज़िर रक्षा के लिए

दादा पूरे दिन याद रहते हैं तो यथार्थ काम हो गया न?

कितने लोगों को तो लगता है कि दादा दिन दहाड़े बातें कर रहे हैं तब फिर वे मुझसे कहने आते हैं कि 'आपने ऐसा-ऐसा कहा था?' मैंने कहा, 'मैं नहीं आया था'। यह सूक्ष्म शरीर बाहर घूमता है। वह तो, जहाँ पर आपका प्रेम हो वहाँ जाता है। जहाँ जितना प्रेम होता है उतना ही वहाँ पर सूक्ष्म शरीर जाता है और उन्हें संभालता है उनकी रक्षा करता है, रक्षण देता है।

ज्ञानी कहते हैं, उसके बाद हमारी ज़िम्मेदारी

प्रश्नकर्ता : तो क्या इसमें सभी को ज्ञान नहीं देते?

दादाश्री : देते हैं न, यदि उसकी स्ट्रोंगनेस (मजबूती) हो तो। 'मुझे यही चाहिए' तो देते हैं फिर भले ही वह पूरा दिन ताश (रमी) खेले फिर भी देते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो आपकी उदारता हुई कि आप दे देते हैं या उसे योग्य पात्र समझ लेते हैं लेकिन वह पात्र को, खुद कैसे निश्चित करेगा?

दादाश्री : वह आपको नहीं देखना हैं, मैं सब कर देता हूँ। आप अपने आपको मुझे सौंप दो, उसके बाद मैं आपका सब कुछ कर दूँगा। मैं ही चला लूँगा।

प्रश्नकर्ता : हमने अपने आपको सौंप दिया हैं यह कैसे पता चलेगा ताकि हमें समझ में आए कि इस तरह से हमारा समर्पण हो गया है?

दादाश्री : अगर आपका काम अपने आप हो जाए तो समझना कि यह मेरे चलाए बगैर चल रहा है यानी कि सौंप दिया है।

प्रश्नकर्ता : अब, हमने आपको समर्पित किया है तो हमारे इस समर्पण को आपने किस तरह स्वीकार किया ताकि हमें पता चलें कि हम इस लेवल पर थे इसलिए समर्पण किया।

दादाश्री : नहीं, नहीं, नही! मुझे कोई ज़रूरत नहीं है। आपके समर्पण कहते ही सब कुछ मेरे पास आ ही जाता है। आपको नहीं करना हो फिर भी वापस आ जाता है। अत: आप इसकी खोज में मत पड़ना।

अन्यत्व नहीं, अनन्यता

जब तक इस दुनिया में किसी को अनन्यता नहीं आ जाती, तब तक वह व्यक्ति कुछ भी नहीं कमा सकता। क्या आपको यह समझ में आता है, 'अनन्य' शब्द समझ में आया आपको?

प्रश्नकर्ता : समर्पण, शरणागति!

दादाश्री : समर्पण और शरणागति सब अनन्यता है। जो देह के मालिक नहीं हैं उनके साथ यदि हम अनन्यता रखेंगे तो मानो कि पूरी दुनिया का, पूरे ब्रह्मांड का सब कुछ मिल गया, पूरी सत्ता मिल गई।

जब अनन्य भक्ति होगी तभी होगा छुटकारा

प्रश्नकर्ता : आपने जो अनन्यता कही न, उसका क्या मतलब है?

दादाश्री : अनन्यता रहनी चाहिए। यह विज्ञान सुना नहीं है, संसार ने कभी देखा नहीं है, ऐसा है यह विज्ञान! अत: जब तक अनन्यता उत्पन्न नहीं होती, तब तक पूर्ण रूप से फल नहीं मिलेगा।

जैसे कि घर में स्त्री होती हैं न, वह अनन्यता से सब कुछ करती है, सभी जगह विवेक रखती है लेकिन अनन्यता अर्थात् क्या? मेरे पति के अलावा दूसरा कोई पति नहीं, तो फिर उसका सब काम सफल हो जाता है, वर्ना सफल ही कैसे होगा? इसीलिए कृष्ण भगवान ने गोपियों से कहा हैं न, कि 'अनन्य भक्ति होनी चाहिए'। क्या कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : अनन्य भक्ति होनी चाहिए।

दादाश्री : अनन्य भक्ति अर्थात् उसे फिर अन्य कोई चीज़ याद ही न आए। घर वगैरह, बच्चे-पति कुछ भी याद ही न आए।

अर्थात्, एक अनन्यता कि भाई, या तो इस कुएँ में गिरो या तो इसमें गिरो। दोनों में से एक में गिरो। दोनों में गिरता रहेगा तो कब अंत आएगा?

प्रश्नकर्ता : यह आप जो कहते हो न, जो कृष्ण ने अर्जुन से कहा था, 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज'।

दादाश्री : कहते हैं 'बस, अनन्य में आ जा, तभी तेरा छुटकारा है, वर्ना छुटकारा कैसे होगा?'

यदि तूने मुक्त पुरुष को ढूँढ लिया है तो फिर तेरा छुटकारा हो जाएगा। जो खुद नर में से नारायण बने हैं, फिर वहाँ पूछने को रहा ही क्या?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, वह छूटता नहीं है। वही दिक्कत है न, ऐसा लगता है कि यह भी ठीक है और यह भी ठीक है, उसका छूटना बहुत कठिन है।

दादाश्री : वह तो चाबुक मारने पर छूटेगा, वर्ना नहीं छुटेगा क्योंकि खुद अपने आपको समझदार मान बैठा है। हम आपसे पूछें कि 'भाई, आप समझदार हो तो चलो आपके घर, न्याय करते हैं।' तो फिर बच्चे और पत्नी सभी के सामने न्याय करें और छोटे बच्चे से पूछें कि 'इनका नंबर कौन सा है?' तब कहता है, 'इनका छठा नंबर आएगा हमारे घर में।' इतना सा, वह तेरह साल का बच्चा होगा! तो भाई! इतनी फीस देता है, इतना खिलाता है, पिलाता है उसके बाद भी तेरा छठा नंबर लगाता है, यह छोटा सा बच्चा! तो भाड़ में जाए तू! उसे तो मन में ऐसा लगना चाहिए कि 'मेरे पिताजी जैसा कोई आदमी है ही नहीं!' कैसा होना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : और फिर ऐसा भी लगना चाहिए के मेरे पति जैसा पति किसी का नहीं है।

दादाश्री : अनन्यता। और क्या? अपने पति को वंदन करना है तो पतिव्रता भाव से करना और बाकी सभी को व्यवहार से वंदन करने में हर्ज नहीं है। व्यवहार से हम सभी को करते हैं, विनय तो सभी के प्रति रखना है लेकिन पति तो एक ही होना चाहिए। ऐसा कुछ होना चाहिए न! उसकी लिमिट होनी चाहिए। उस लिमिट से बाहर जाने के बाद रहा क्या अपने पास?

अर्थात् मैंने जो अनन्यता का अर्थ समझाया, वह उसे फिट हो गया और फिर आज ज्ञान भी अच्छी तरह से फिट हो गया, वर्ना सब कुछ बिगड़ता रहता।

जो ज्ञान दूसरों को, हर एक व्यक्ति को समझ में नहीं आए, वह ज्ञान अज्ञान ही है। पढ़ें-लिखें या अनपढ़ सभी को समझ में आ जाना चाहिए, वर्ना, वह सब अज्ञान है।

ज्ञान को नहीं समझते और तुलना करते हैं कहाँ भेद विज्ञानी की बातें! पूरी दुनिया में किसी के पास एक अक्षर भी नहीं है। और वहाँ पर तुलना करने जाएँगे तो फिर क्या होगा? अनन्यता चला जाएगा। तो फिर आपको फल नहीं मिलेगा। कृष्ण भगवान ने क्या कहा है कि, 'अनन्यपने में आ जाओ। अनन्य रूप बन जाओ।' जहाँ आपको अच्छा लगे, ठीक लगे, वहाँ अनन्यता वाले बन जाओ, कम्प्लीट (संपूर्ण) रूप से।

अनन्य भक्ति के बगैर कभी भी काम सफल नहीं हो सकता। अब, इन कोरी स्लेट वालों में तो अनन्य भक्ति है ही लेकिन जिनकी स्लेट पर लिखा हुआ है उन्हें झंझट है। कोरी स्लेट वालों को तो झंझट ही नहीं है। भाई, लिखा ही नहीं था तो अब क्या? और जो थोड़े बहुत अंक लिखे थे, वें मिटा दिए। अतः फिर हम उन्हें सावधान करते हैं। इसीलिए कृष्ण भगवान ने कहा है न, अनन्य प्रेम।

अनन्यता ही करवाएगी पूर्णाहुति

प्रश्नकर्ता : 'जिनकी आज्ञा का पालन करना है' उनके लिए अनन्यता होना चाहिए', यह समझाइए।

दादाश्री : जिनकी आज्ञा का पालन करना है, उनके प्रति अनन्यता आनी चाहिए। आपको और कुछ नहीं करना है। आपने अनन्यता रखी तो फिर चल निकलेगा। यह तो पानी के (बहाव के) बीच में इतना जो पत्थर का टुकड़ा पड़ा हुआ है,

उसे हटाने की ज़रूरत है। बस, और कुछ नहीं उससे फिर पानी तेजी से बहने लगता है।

अनन्यता अर्थात् जिनसे हमने पटंतर (आत्मसाक्षात्कार / आत्मा-अनात्मा का भेदांकन) प्राप्त किया हो, पटंतर या कुछ विशेषता का अनुभव किया हो तो फिर अनन्यता रखनी है। और यदि अनुभव नहीं हुआ है फिर भी वहाँ पर अनन्यता रहेगी ही (क्योंकि समर्पण किया है)।

इसीलिए अनन्यता करने के बाद बस इस एक पत्ते को हटाने की ज़रूरत है और आप जैसे को तो देर ही नहीं लगेगी। आप जैसे को तो, यदि एक ही बार अगर आप पत्ता हटा दोगे न तो आपको अनुभव हो जाएगा।

जिनके प्रति अनन्य श्रद्धा हो, खुद भी उन्हीं जैसा बन जाता है लेकिन अनन्य श्रद्धा रहना, बहुत मुश्किल चीज़ है!

जहाँ से अनुभूति वहाँ चाहिए अनन्य भक्ति

अनन्य अर्थात् हमें यह जो एक सत्य लगा हो तो, उसी सत्य की गहराई में ठेठ तक पार उतर जाना चाहिए। अन्य किसी (धर्म गुरु) से उसकी तुलना नहीं करनी चाहिए। तुलना करना आसान नहीं है।

यदि एक व्यक्ति यहाँ पर प्योर सोने के ज़ेवर लेकर आए और दूसरा रोल्ड गोल्ड के ज़ेवर लाए और वह उन दोनों को समान कहे तो जानकार व्यक्ति उससे क्या कहेगा? समान दिखाई देता है ज़रूर, समान है ऐसा अनुभव भी होता है लेकिन उससे कुछ हासिल नहीं होता और इतनी हद तक दोनों में अंतर करना नहीं आता। इंसान का सामार्थ्य नहीं है। दादा की वाणी की बराबरी करने की शक्ति किसमें है? एक भी ऐसा व्यक्ति ढूँढकर ले आओ, जिसमें यह शक्ति हो! यह तो सरस्वती है! प्रत्यक्ष सरस्वती! इसकी बराबरी कैसे हो सकती है? यह तो मैं खुद कह रहा हूँ। यह मेरी वाणी नहीं है, टेपरिकॉर्डर की वाणी है। मैं इसे सरस्वती कहता हूँ लेकिन उसके साथ किसी के एक वाक्य की भी बराबरी नहीं हो सकती। वर्ल्ड में किसी भी जगह पर नहीं हो सकती! यह तो अद्‌भुत वाणी है! यह शब्द चेतन है। दुनिया में चेतन शब्द नहीं होता। यह शब्द तो मरे हुए को भी जीवित कर देता है!

जिन्होंने पटंतर करवाया उन्हें सर्वस्व समर्पण

प्रश्नकर्ता : आपने ये जो आज्ञाएँ दी हैं, ये जो आपने जागृति करवाई है, उसमें ब्रह्मांड के भाव समाए हुए हैं। अब इससे आगे कहने को कुछ भी नहीं रहा।

दादाश्री : तमाम शास्त्र, सभी आगम इसमें आ गए। यह चौबीस तीर्थंकरों का सम्मिलित विज्ञान है यह!

प्रश्नकर्ता : हमारे दिल में जो लगा वही आपसे कह दिया साहब, लो!

दादाश्री : जिनके द्वारा हमने पटंतर प्राप्त किया है, उन्हें सर्वस्व अर्पण करने में कुछ भी संकोच नहीं होना चाहिए। 'सर्वस्व अर्पण कर लेना, कहते हैं। जिनसे हमने पटंतर प्राप्त किया। क्या थे और क्या बन गए! पटंतर तो जात्यांतर कहलाता है।

हम जो पाँच आज्ञाएँ देते हैं न, उन आज्ञाओं का जितना पालन करोगे, उतना लाभ होगा। कम पालन करोगे तो लाभ ज़रा कम होगा लेकिन वे क्रोध-मान-माया-लोभ तो चले ही जाते हैं। निर्बलताएँ चली जाती हैं। यह तो ऐसा है कि यह जो ज्ञान प्राप्त हुआ है न, वह तो यदि आप पाँच अरब रुपए दो फिर भी यह ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। पाँच लाख जन्मों में भी नहीं होगा। ऐसा यहाँ एक ही घंटे में प्राप्त

हो जाता है इसीलिए टाइम नहीं बिगाड़ना है। यह विश्लेषण करने की चीज़ नहीं है। दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन! कैश बैंक में ऐसा नहीं कह सकते कि आपका चेक कितनी देर बाद आएगा और कब मुझे पैसे मिलेंगे, ऐसा-सब नहीं कह सकते। यह समझ में आ रहा है न? कैश बैंक कहा तो हम समझ जाते हैं या नहीं? क्या लगता है आपको?

मैंने तो अपने सभी महात्माओं से कह दिया है, 'आपको कुछ भी नहीं करना है। मुझे करना है, सिर्फ मेरी आज्ञा का पालन करना।' लिफ्ट से हाथ मत निकालना और ऐसा मत करना कि लिफ्ट टूट जाए । यदि आपको ही करना है तो फिर दादा को क्या करना रहा? दादा सब कर लेंगे। और देखो, न्याय क्या कहता है कि आप समर्पित होने के बाद आपको क्या करना रहा?

समर्पण का तरीका सिखाते हैं दादा

यह विज्ञान है, यह तो अक्रम विज्ञान है! विज्ञान का मतलब है तुरंत फलदाई। करना नहीं होता, उसे विज्ञान कहते हैं और करना होता है, उसे ज्ञान कहते हैं! जहाँ करना होता है, उसे क्या कहेंगे? जैसे मैं आपसे कहूँ कि 'इतना करके लाना।' तब कहेंगे, 'साहब, आप इतने बड़े गुरुपद पर बैठे हैं और फिर मुझे करके लाने के लिए कह रहे हैं? मैं तो अपंग हूँ।' क्या कहना है? 'मैं तो पंगु हूँ।'

ज्ञानी किसे कहेंगे? उसे, जो बच्चों के लिए खुद ही सब कुछ कर लें। बच्चा खुश हो जाना चाहिए। सामर्थ्यवान व्यक्ति को उसे संभाल ही लेना चाहिए। आजकल उपदेशक क्या करते हैं? 'आप ऐसा करना, ऐसा करना। आपसे नहीं हो पा रहा है।' हमें उपदेशकों से ऐसा कहना चाहिए कि, 'साहब, मैं आपके पास क्यों आऊँ? यदि मुझे ही करना है तो मैं आपके पास क्यों आऊँगा? मैं तो अपंग (असमर्थ) हूँ।'

हम जिन्हें अर्पण करते हैं, जिन्हें समर्पित होते हैं तो हमारी ज़िम्मेदारी उन्हें खुद ले लेनी चाहिए।

इसीलिए हम क्या कहते हैं कि आपको मुझसे चिपक जाना है कि 'दादा, आप ही कर दो। भाई साहब, मैं तो थक गया हूँ, अंनत जन्मों से थक गया हूँ। कर-करके थक गया हूँ।' इस तरह से पीछे पड़ जाना।

प्रश्नकर्ता : थक गए हैं इसलिए तो आपके पास आए हैं।

दादाश्री : अर्थात् 'अब आपके पीछे पड़ा हूँ साहब, जो करना हो वह करो। मार डालना हो तो मार डालो, जीवित रखना हो तो जीवित रखो लेकिन मोक्ष ले जाओ।' ऐसा कहना है। इस तरह से पीछे पड़ने की ज़रूरत है। मेरे सिखाने से आप कर पाओ, वैसा संभव नहीं है! यही कलियुग की निशानी है न!

प्रश्नकर्ता : हम तो आपको समर्पित होते हैं, आपकी कृपा से समर्पित हो पाते हैं।

दादाश्री : समय ऐसा है इसीलिए, वर्ना समर्पण नहीं करवाते। यह जो समर्पण कहते हैं न, वह तो बहुत बड़ा ज़ोखिम है। मैं ज़ोखिम क्यों लेता हूँ कि कब तक ये लोग भटकेंगे? और मुझे ज़ोखिम लेने में कोई हर्ज नहीं है क्योंकि मेरा कोई *ऊपरी* नहीं है। जो सेंक्शन (मंजूर) न करे। यदि *ऊपरी* होता तो सेंक्शन (मंजूर) नहीं करता तब मैं क्या करता?

ज्ञानी को सब कुछ सौंपने से आ जाता है निबेड़ा

प्रश्नकर्ता : दादा, जब आपने हमें ज्ञान दिया,

तब हमने सब कुछ समर्पण कर दिया था लेकिन फिर चोरी छिपे हम उसे वापस ले लेते हैं।

दादाश्री : क्योंकि उल्टा अभ्यास है। अगर डॉक्टर कहे कि, 'दाँए हाथ से मत खाना। वहाँ जो दर्द है, वह बढ़ जाएगा।' फिर भी खाते समय दाँया हाथ ही पहले आ जाता है। अर्थात् लाइन ऑफ डिमार्केशन (भेद रेखा) डाल दी है न कि वह 'अपना नहीं है।' इतना ध्यान में रखना है कि जो कुछ भी दुःख देता है, जिससे उल्टा असर होता है, वह 'अपना नहीं है' और जो अपना होगा उससे उल्टा असर नहीं होगा। बस, ये दोनों बातें समझ लो। सरल है न! बस!

हम तो कहते हैं कि, 'पूरे संसार के दुःख हमें हों। आपमें यदि शक्ति है तो ज़रा सा भी अंतरपट रखे बगैर, आपके सारे दुःख हमारे चरणों में अर्पण कर जाओ। फिर यदि दुःख आए तो हमसे कहना' लेकिन इस काल में मुझे ऐसे भी लोग मिले हैं, जो कहते हैं कि, 'दुःख यदि आपको दे दें तो हमारे पास क्या बचेगा?' अरे! उसे खुद को मालूम नहीं कि, 'वह खुद ही अनंत सुख का कंद है। यदि तू दुःख अर्पण कर देगा तो निरा अपार सुख ही बचेगा' लेकिन किसी को दुःख अर्पण करना भी नहीं आता!

आपके दुःख मुझे सौंप दो और यदि आपको विश्वास हो तो वे आपके पास नहीं आएँगे। मुझे सौंपने के बाद, यदि आपका विश्वास टूटेगा तो आपके पास वापस आएँगे इसलिए आपको कुछ दुःख हों तो मुझे कहना कि, 'दादा, मुझे इतने दुःख हैं, वे मैं आपको सौंप देता हूँ।' मैं वे ले लूँ तो निबेड़ा आ जाएगा, नहीं तो निबेड़ा कैसे आएगा?

सर्वस्व अर्पण करने से होता है कल्याण

प्रश्नकर्ता : दादा, यह सर्वस्व अर्पणता ही है न। क्या बाकी बचा? दादा के अलावा मुझे और कुछ भी नहीं चाहिए। अब दादा का ही अवलंबन, अन्य कुछ भी नहीं।

दादाश्री : तो आपका जो कुछ बाकी है, वह पूर्ण हो जाएगा लेकिन गिन्नी की ज़रूरत तो है न?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह नहीं।

दादाश्री : तो फिर काम हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : रात को दो-तीन बजे उठ जाता हूँ तो दादा को पकड़कर बैठ जाता हूँ।

दादाश्री : वह सब है लेकिन यह जो है न, यह आपका और यह मेरा, उस भेद को खत्म करने के लिए घर पर मैंने आपसे कहा था कि 'इतने बेटी को दे दो, बाकी सब मंदिर में दे दो न!' आपके सिर पर कुछ भी नहीं, ऐसा कर दो। टैक्स भी नहीं भरना होगा आपको।

प्रश्नकर्ता : ओहोहो! अब हर्ज नहीं है, समझ गया।

दादाश्री : मेरी तरह रहो। मुझे पैसों की ज़रूरत हो तब मैं कहता हूँ, 'नीरू बहन मुझे दीजिए'। आपको ज़रूरत भी किसलिए है? सब कुछ देने वाले लोग हैं ही साथ में। उस दिन जो कहा था, वह इसीलिए कहा था लेकिन आप उस मूल आशय को पूरी तरह से समझ नहीं पाए न!

प्रश्नकर्ता : दादा, समझ तो गया लेकिन दुनिया में मेरा और कोई नहीं है। अब देखिए, यह उम्र हो रही है।

दादाश्री : हमने कहा है वैसा करो तो फिर आत्मा उसमें रहेगा। आत्मा यदि आत्मा में आ गया न तो मुक्त, वर्ना कहेगा, 'मेरे पास यह है और

वह है और वही आधार! आधार।' किसका आधार रखता है? जो दो-पाँच लाख रुपए हैं, उनका।

प्रश्नकर्ता : नहीं! और कोई बात नहीं है, इतना भय रहता है कि सभी लोगों ने खाया ही है। जहाँ भरोसा रखता हूँ, सभी जगह लोग खा जाते हैं। अब मुझे ऐसा भय घुस गया है। उम्र बढ़ रही है, बाकी अंदर कोई ममता नहीं रही है।

दादाश्री : भय घुस जाता है क्योंकि 'इसका कैसे करूँगा?' वह तो मैं उसी दिन समझ गया था लेकिन मैंने कहा था, 'धीरे-धीरे निकाल दूँगा।'

प्रश्नकर्ता : बीमारी आई न तो डेढ़ लाख रुपये का खर्चा हो गया था, तभी खर्च किए वर्ना और कौन देखता?

दादाश्री : नहीं, नहीं। हम जो ऐसा मानते हैं न कि देखने वाला है, वह मेरा देखेगा लेकिन अंत में वह भी गलत साबित होता है, दग़ा साबित होता है। अत: सब से बड़ी बात यही है कि दे दो सब भगवान के घर में। फिर सारी ज़िम्मेदारी दादा की। मैंने अपने पास चार आने भी नहीं रखे हैं। सभी पैसे यहाँ पर रख देने हैं, सभी कुछ! और भविष्य में जो आएगा वह भी यहीं पर। हमारी 'माताजी' की ज़मीन के पैसे आने वाले हैं, वह भी यहीं पर रख दूँगा। मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। मुझे किसलिए? अमरीका वाले गाड़ी देना चाहते हैं। मैं क्यों लूँ? लेकिन यह ज़रा बैठक की जगह रखी तो मैं, आत्मा और बैठक, तीन हुए। वर्ना मैं और आत्मा एक ही। अर्थात् यह 'मैं' समर्पित हो गया।

'हूँ' का हुआ समर्पण, बैठक में ज्ञानी एक ही

प्रश्नकर्ता : दादा ने कहा न, मैं आत्मा और बैठक...

दादाश्री : 'मैं' को बैठक का आधार है! इस दुनिया में सिर्फ ज्ञानी को ही किसी चीज़ का आधार नहीं रहता। आत्मा का ही आधार! जो निरालंब है!

प्रश्नकर्ता : आत्मा का आधार किसे रहता है, 'मैं' को रहता है या बैठक को?

दादाश्री : मैं ही आत्मा हूँ और आत्मा ही मैं हूँ। आत्मा का ही आधार, अर्थात् अवलंबन नहीं है तो निरालंब बन जाएगा, निरालंब! वे जानते हैं, दादा निरालंब हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी मैं और आत्मा एक हो जाएँगे?

दादाश्री : एक ही हैं लेकिन बैठक की वजह से अलग हैं।

प्रश्नकर्ता : बैठक को हटा दें तो मैं और आत्मा एक हो जाएँगे?

दादाश्री : एक हो जाएँगे। बस।

प्रश्नकर्ता : या फिर क्या ऐसा हो सकता है कि बैठक हो फिर भी मैं और आत्मा एक हो जाएँ?

दादाश्री : नहीं-नहीं। बैठक के लिए गुरखा रखना पड़ेगा और उसके लिए ऐसा विचार आएगा कि, 'इसका क्या करेंगे?' यह बैठक भी अगर सही निकली तो निकली, नहीं तो दगा निकलता है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दगा ही निकलता है।

दादाश्री : इसकी बजाय अपना क्या बुरा है?

प्रश्नकर्ता : बैठक में सिर्फ ज्ञानी को ही रखना है, और कुछ भी नहीं।

दादाश्री : सब ज्ञानी पर छोड़ देना है, आप जो भी करो वह। आपका जो करें वही हमारा

कीजिए। ज्ञानी ही खुद का आत्मा है इसलिए उन्हें तो अलग मान ही नहीं सकते। फिर भय नहीं रखना है कि अगर ज्ञानी बीमार हो जाएँगे या अगर वे नहीं रहेंगे तो हम क्या करेंगे? ऐसा कोई भय नहीं रखना है। ज्ञानी मरते ही नहीं हैं, यह तो सिर्फ शरीर मरता है। यह हमारा अवलंबन है ही नहीं न! हम निरालंब हैं!

जीवित को कर दिया अर्पण और बच गया मृत

दादा ने ज्ञान दिया, अब कोई चीज़ अपनी नहीं रही! बल्कि ये मन-वचन-काया थे, उन्हें भी दादा को सौंप दिए, तीन-तीन पोटलियाँ सौंप दी। अब दादा को सौंपने के बाद, उनसे पूछे बगैर हम उनका उपयोग नहीं कर सकते। यों देखने जाएँ तो उन्होंने हमें छूट दे दी है कि भाई, फाईलों का *निकाल* (निपटारा) करना।

प्रश्नकर्ता : मन-वचन और काया, भावकर्म-द्रव्यकर्म और नोकर्म दादा को अर्पण कर देता हूँ लेकिन फिर वापस मैं तो भोगता ही हूँ। मैंने अर्पण कर दिए ऐसा कैसे कह सकते हैं?

दादाश्री : जीवित भाव अर्पण कर दिया है और मृतप्राय आपके पास रहा। अर्थात् जीवित मन, जीवित वाणी और जीवित अंहकार, ये सब जीवित भाग अर्पण कर दिया है और बाकी आपके पास जो कुछ बचा है, वे फल देने को तैयार हो चुके हैं बस उतने ही बचे हैं आपके पास।

प्रश्नकर्ता : यह बात समझ में आ जाए तो बहुत बड़ा कल्याण हो जाएगा।

दादाश्री : यह बात समझ में आ गई तो हल ही आ गया न! लेकिन समझ में नहीं आता है न! यह तो अक्रम है इसलिए चलता रहता है। समझ में न आए तो भी चलता रहता है। छोटे बच्चे का भी चलता है न!

जिसे 'मेरा' मानता था, वह सब आपको अर्पण कर दिया। मेरे भावकर्म, मेरे नोकर्म, मेरे द्रव्यकर्म, मेरा मन, मेरा शरीर, मेरा वचन वह सब आपको सौंप दिया।

प्रश्नकर्ता : वह तो मैं ऐसा सोचा करता था कि ये सब अर्पण ज़रूर कर देते हैं लेकिन कुछ देते तो हैं ही नहीं।

दादाश्री : नहीं। लेकिन उसे अगर समझने के बाद सौंपें ,तब तो कल्याण ही हो जाए लेकिन वह समझ में आता नहीं है न!

समर्पित होते ही बन गया भगवान

प्रश्नकर्ता : दादाजी, बाद में मैं सोच रहा था कि जिसने आपको भावकर्म-द्रव्यकर्म-नोकर्म समर्पित कर दिए हैं, वह कैसा बन गया है?

दादाश्री : वह तो असल हो गया लेकिन अब खुद का पुराना अभ्यास है न, वह अभ्यास जल्दी से नहीं जाता।

प्रश्नकर्ता : वर्ना तो सहज ही हो गया न?

दादाश्री : भगवान ही बन गया लेकिन उस तरह से रहना आना चाहिए न! जब चारित्र मोह निकले तब वैसा रहना आना चाहिए न!

प्रश्नकर्ता : रहना आना चाहिए अर्थात् किस तरह से रहना चाहिए दादाजी?

दादाश्री : वीतरागता से।

श्रद्धा की मूर्ति को सब कुछ समपर्ण

ऐसा है, इस जगत् में श्रद्धा आती है और चली जाती है। सिर्फ ज्ञानीपुरुष ही ऐसे हैं कि जो श्रद्धा की ही मूर्ति हैं, वहाँ पर सभी को श्रद्धा आ जाती है। उन्हें देखते ही, बात करते ही श्रद्धा आ जाती है। ज्ञानीपुरुष श्रद्धा की मूर्ति कहलाते

हैं। वे तो कल्याण कर देते हैं! वर्ना फिर भी आपकी श्रद्धा ही फल देती है।

यानी श्रद्धा तो, अगर मैं गालियाँ दूँ तब भी रहे तो वह सच्ची श्रद्धा है। मान के कारण थोड़ी देर श्रद्धा टिकती है लेकिन फिर वह उखड़ जाती है। अपमान हो वहाँ पर भी श्रद्धा रहे, उस समय वह टिकी हुई श्रद्धा उखड़ नहीं जाती। एक बार श्रद्धा बैठने के बाद चाहे वे हमें गालियाँ दें, मारें फिर भी अपनी श्रद्धा टूटे नहीं, वह अविचल श्रद्धा कहलाती है। ऐसा होता है क्या? वैसी श्रद्धा बैठे बगैर मोक्ष नहीं है। यह आपको गारन्टी से कहता हूँ।

बाकी, हमें ठीक नहीं लगे और घर चले जाएँ तो, वह श्रद्धा ही नहीं कहलाती। आप अपनी अनुकूलता ढूँढ रहे हो या मोक्ष ढूँढ रहे हो? ठीक नहीं लगे और चले जाओ तो वह श्रद्धा ही कैसे कहलाएगी? आपको कैसा लगता है? श्रद्धा का मतलब तो, सौंप दिया सब कुछ!

व्यवहार-निश्चय की रक्षा

प्रश्नकर्ता : मैं तो आपके चरणकमलों में आ गया हूँ। अंत में यही बचा है, यही उपाय है।

दादाश्री : बस, ऐसा कोई भी एडजस्टमेन्ट होना चाहिए, जिससे कि निरंतर सभी प्रकार से हमारी रक्षा हो, व्यवहार व निश्चय से। व्यवहार से दाग़ लगना बंद हो जाएँगे, निश्चय से दाग लगना बंद हो जाएँगे और बोझ रहित हो जाएँगे, हल्के फूल जैसे। यहीं पर मुक्ति का अनुभव करें। जितने कोने छूट गए, जितने खिंचाव टूटे उतना तो मुक्त हुए न, मुक्त हुए न! हमें करोड़ों जीव खिंचते हैं, डोरियों से, जितना डोरियों से मुक्त हो गए, जितने बंधन टूट गए उतने तो मुक्त हुए न! जितने बाकी हैं, वे बाद में छोड़ देंगे, यही रास्ता है। इसी से सब कुछ छूट जाएगा।

दादा का अंतिम संदेश, महात्माओं के लिए....

किसी के भी प्रभाव में न आएँ, ऐसी दुनिया को तुझे एक तरफ रखना आए, उसे समर्पण भाव कहते हैं। यानी कि जो 'ज्ञानीपुरुष' का हो, वही मेरा हो। खुद की नाव, उनसे अलग होने ही नहीं दे, जुड़ी हुई ही रखे, अलग हो जाए तो उलट जाएगा न! अत: ज्ञानी के साथ ही खुद की नाव जोड़कर रखना।

प्रश्नकर्ता : आपने बहुत फाइन (अच्छा) उदाहरण दिया है। बिल्ली अपने बच्चों को मुँह से पकड़कर घूमती है जबकि बंदरिया के बच्चे खुद ही उससे चिपक जाते हैं।

दादाश्री : चिपक जाते हैं, छोड़ते नहीं। क्योंकि जब बंदरिया पंद्रह फुट कूदती है तब बच्चा तुरंत ही आँखें बंद करके उससे चिपका रहता है। वह बच्चा जानता है कि 'यह आपकी ज़िम्मेदारी नहीं है भाई, यह मेरी ही ज़िम्मेदारी है', इस तरह से चिपका रहता है कि यदि बंदरिया गिर जाए तब भी उसे कुछ नहीं होता। ऐसा सीख जाना है। पकड़ सकोगे?

प्रश्नकर्ता : उसी तरह से पकड़ना है दादा को।

दादाश्री : अभी तो, जब पकड़ेगा तभी न?

प्रश्नकर्ता : पकड़े ही है न दादा को।

दादाश्री : पकड़ा है? आपने भी पकड़ा है दादा को? आपको, मुझसे चिपके रहना है, मुझे नहीं चिपकाना है। बिल्ली को अपने बच्चों को मुँह में दबाकर ले जाना पड़ता है, जबकि बंदरिया के बच्चे 'माँ' को नहीं छोड़ते। वह कूदती है तो बच्चा भी उसके साथ कूद जाता है। ऐसे पकड़े रखता है! आप सभी बंदरिया के बच्चे की तरह हमसे चिपके रहना।

- जय सच्चिदानंद।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

19-21 मई : पूज्यश्री का सत्संग सूरत में आयोजित हुआ। सूरत के महात्माओं एवं GNC के बच्चों द्वारा पूज्यश्री का भव्य स्वागत किया गया। पहले दिन 'समझदारी से वाणी के झगड़ों को मोड़ देना' टॉपिक पर सत्संग हुआ था, प्रारंभिक सत्संग में वाणी के बारे में समझाया गया उसके बाद पूज्यश्री ने महात्माओं व मुमुक्षुओं की उलझनों के समाधान दिए। दूसरे दिन ज्ञानविधि में 2000 मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान प्राप्त हुआ। सेवार्थियों के लिए भी पूज्य श्री का सत्संग रखा गया था। जिसमें सूरत के JJ-111 की प्रचार टीम के सेवार्थी भी शामिल थे। पूज्यश्री ने विशेष रूप से समय निकालकर WMHT, MMHT, GNC वगैरह ग्रुप के कोर्डिनेटरों को मार्गदर्शन दिया गया एवं सूरत के विविध सेन्टरों के कोर्डिनेटरों के फैमिली के साथ बातचीत भी की।

21-13 मई : पूज्यश्री सूरत से वापी पधारे। वहाँ पर वापी के महात्माओं एवं बच्चों द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। पूज्यश्री ने वापी के सत्संग सेन्टर का ओपनिंग किया। ज्ञानविधि से पहले एक दिन और बाद में आप्तपुत्र सत्संग हुआ। महात्माओं व मुमुक्षुओं ने इसका लाभ लिया। वापी में पहली बार पूज्यश्री के सानिध्य में ज्ञानविधि आयोजित हुई। ज्ञानविधि में 600 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। स्थानीय महात्माओं तथा सेवार्थियों को पूज्यश्री के साथ इन्फॉर्मल सेशन का भी लाभ मिला।

1-3 जून : अडालज त्रिमंदिर में पूज्यश्री की निश्रा में त्रिदिवसीय सेवार्थी शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें 4500 से भी ज़्यादा सेवार्थी महात्माओं ने भाग लिया। यह शिविर ऐसे महात्माओं के लिए आयोजित हई थी जो अपने सेन्टर में नियमित सेवा देते हैं तथा बड़े कार्यक्रमों के दौरान सेवा देते हैं। पूज्यश्री का सत्संग अलग-अलग टॉपिक पर हुआ। पहले दिन सुबह 'पूर्णाहुति के लिए सेवा का महत्व' तथा शाम को 'सेवा में प्योरिटी (मान, लक्ष्मी और विषय की)'। अगले दिन 'सेवा में विनय और सेवा में सत्ता' और शाम को 'सेवा में होने वाले कषाय' पर प्रश्नोत्तरी सत्संग हुए। जिससे महात्माओं को कई ज्ञान की चाबियाँ मिली। शिविर के दौरान सत्संग, गरबा, एक्टिविटी, आप्तपुत्रों को सेवा में हुए अनुभव, जैसे कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। शिविर पूरा होने के बाद पूज्यश्री की निश्रा में कोर्डिनेटरों के लिए एक दिन के विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें विविध सेन्टरों के कोर्डिनेटरों ने हिस्सा लिया। जिसमें पूज्यश्री का विशेष सत्संग एवं 'दादा दरबार' में दर्शन-मार्गदर्शन का कार्यक्रम आयोजित हुआ।

7 जून : मुंबई में बोरीवली में त्रिमंदिर के निर्माण कार्य की शुरुआत श्री सीमंधर स्वामी के प्रतिमा की स्थापना से की गई। प्रतिमा को ट्रेलर द्वारा जयपुर से मुंबई लाया गया। महात्माओं ने इस घड़ी का आनंद उठाया। भगवान की प्रतिमा मंदिर में स्थापित करने के अवसर पर पूज्यश्री विशेष रूप से मुंबई पधारें। स्वामी के प्रक्षाल-पूजन-आरती, दर्शन एवं प्रासंगिक बातें पूज्यश्री की निश्रा में हुई। 3000 महात्माओं ने इस अवसर का लाभ लिया।

9-11 जून : चार साल बाद पटना में पूज्यश्री के सत्संग व ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। बिहार के अलावा पंजाब, आसाम, त्रिपुरा, वेस्ट बंगाल के महात्माओं व मुमुक्षुओं ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। पूरा सत्संग हॉल महात्माओं से भरा हुआ था। बहुत से महात्माओं ने लॉबी में बैठकर सत्संग का लाभ लिया। ज्ञानविधि में 800 मुमुक्षुओं ने ज्ञान प्राप्त किया।

12-14 जून : पहली बार उत्तर प्रदेश राज्य के वाराणसी में पूज्यश्री के सत्संग-ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। पूज्यश्री ट्रेन द्वारा पटना से वाराणसी पहुँचे। वाराणसी में भी पटना जैसा दृश्य देखने मिला। महात्माओं व मुमुक्षुओं की उपस्थिति हॉल की कैपेसिटी से भी ज़्यादा थी। सत्संग के दौरान महात्माओं ने स्टेज के पीछे, लॉबी में तथा हॉल के बाहर बैठकर मुमुक्षुओं के लिए हॉल में जगह बनाई। वाराणसी में ज्ञानविधि में 850 मुमुक्षओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्यश्री के साथ इन्फॉर्मल सत्संग भी हुआ। जिसमें गंगा नदी में बोटिंग के दौरान प्रश्नोत्तरी सत्संग तथा कीर्तन भक्ति हुए। व्यक्तिगत मार्गदर्शन के लिए 'दादा दरबार' का भी आयोजन हुआ। जिसमें महात्माओं ने नज़दीकी व्यक्तियों का प्रतिक्रमण किया।

विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम

सेन्टर		समय	कार्यक्रम का पता	संपर्क
अजमेर	**(29 जुलाई)**	शाम 5 से 9	लाल बहादुर शास्त्री सामुदायिक भवन, शास्त्री नगर.	9460611890
अमरावती	**(22 जुलाई)**	सुबह 10 से 1	दादा भगवान सत्संग केन्द्र, कॉर्पोरेशन बेंक के नीचे, भारतीय महाविद्यालय के पास, राजापेठ.	9422335982
आगरा	**(29 जुलाई)**	सुबह 10 से 1	यूथ होस्टल, मरीना होटल के सामने, हरिपर्वत क्रासिंग के पास.	9258744087
आर्वी	**(29 जुलाई)**	सुबह 10 से 1	प्रभाकर खानके, मारुती वार्ड, मून लाइट फोटो स्टूडियो के पास, आर्वी, जि. वर्धा.	8806552381
औरंगाबाद	**(27 जुलाई)**	शाम 5-30 से 8-30	प्लाट नंबर-74, N3 CIDCO, हाईकोर्ट के पास, जालना रोड.	8308008897
अंजड	**(27 जुलाई)**	सुबह 8 से 11	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, MG रोड, अंजड, जि.बरवानी.	9617153253
बेलगाम/ हुबली	**(29 जुलाई)**	सुबह 9 से 4	पाटीदार भवन, 249, गणेश मार्ग, शास्त्री नगर, **बेलगाम.**	9945894202
बेंगलोर	**(27 जुलाई)**	शाम 5-30 से 7-30	श्री हिराचन्द नाहर जैन भवन, नं-26, 3rd क्रोस, गाँधीनगर, सिंडिकेट बैंक के पीछे, बेंगलोर.	9590979099
भिलाई	**(27 जुलाई)**	सुबह 10 से 5	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास.	7000177475
भोपाल	**(29 जुलाई)**	सुबह 9 से 5	ऑडिटोरियम - कुक्कुट विकास निगम, MANIT चौक के पास, कोटरा रोड, आराधना नगर, भोपाल.	9425190511
भुवनेश्वर	**(29 जुलाई)**	सुबह 10 से 4	डुप्लेक्श-27, NRO सागर श्रीक्षेत्र, PO-जनला, भुवनेश्वर.	9841008769
चंडीगढ़	**(29 जुलाई)**	सुबह 10 से 1	गढ़वाल भवन, साईबाबा मंदिर के पास, सेक्टर 29A.	9872188973
बिलासपुर	**(27 जुलाई)**	शाम 4 बजे से...	B-39, पारस प्रभा, गुप्ता गली, मन्नू चौक, बिलासपुर.	9525530470
चेन्नई	**(22 जुलाई)**	सुबह 10 से 4	पुराना नं 142/2, 1st स्ट्रीट, पुरुस्वल्कम हाई रोड, किल्पौक.	7200740000
दमोह	**(29 जुलाई)**	सुबह 9 से 1	घर नं. 101, वैशाली नगर, दमोह.	9926985853
दर्यापुर	**(27 जुलाई)**	शाम 4-30 से 7-30	दादा भगवान सेंटर, वाल्मिकी नगर, बनोसा, जि. अमरावती.	7218133513
दिल्ली	**(29 जुलाई)**	दोपहर 2 से 6	शाह ओडिटोरीयम, गुजराती समाज के पास, सिविल लेन, काश्मिरी गेट मेट्रो स्टेशन के सामने.	9810098564
गाज़ियाबाद	**(27 जुलाई)**	सुबह 10 से 2-30	227, सेक्टर-17-E, कोनार्क एन्क्लेव, मदर डेयरी के पास, वसुंधरा, गाजियाबाद.	9911142455
गोरखपुर	**(27 जुलाई)**	शाम 4 से 7	श्री दीपचन्द निषाद, ग्राम कोडरीकला, पोस्ट भीटी रावत, थाना सहजनवा, गोरखपुर.	7800656738
गुडगाँव	**(29 जुलाई)**	शाम 4 से 7	राधा-कृष्णा मंदिर बेसमेंट हॉल, रहेजा अटलांटिस के पास, सेक्टर-31, गुडगाँव.	9873933544
गुवाहाटी	**(29 जुलाई)**	सुबह 11 से 2	हाउस नं. 17, श्रीनगर, क्रिश्चियन बस्ती बस स्टॉप के पास, गुवाहाटी.	7002847355
ग्वालियर	**(29 जुलाई)**	शाम 4 से 7	के. एस. मेमोरियल हाई स्कूल, गायत्री विहार कोलोनी, पिन्टु पार्क, ग्वालियर.	9425712481
हैदराबाद	**(27 जुलाई)**	शाम 5 से 8	आमंत्रण होटल & बैंक्वेट, 1-1-11, RTC क्रोस रोड, BSNL भवन के पास, मुशीराबाद मेईन रोड, कवाडी गिदा, हैदराबाद.	9885058771

दादावाणी

सेन्टर		समय	कार्यक्रम का पता	संपर्क
इन्दौर	**(22 जुलाई)**	सुबह 10 से 5	दादा दर्शन, 89 B राजेन्द्र नगर, टंकी होल, मेईन रोड, रेल्वे स्टेशन के पास.	9893545351
जयपुर	**(29 जुलाई)**	सुबह 10 से 5	'वर्धमान भवन', D-14A, ज्योति नगर, पानी की टंकी के पास, लालकोठी, जयपुर.	7737806148
जबलपुर	**(27 जुलाई)**	शाम 4-30 से 8	5वी मंजिल, समदडीया मॉल, ग्रांड समदडीया होटल के ऊपर, सिविक सेंटर, जबलपुर.	9425160428
जालंधर	**(27 जुलाई)**	सुबह 10 से 2	C/O ईगल प्रकाशन कोम्पलेक्स, सेन्ट्रल मिल कम्पाउन्ड, दमोरिया पुल के पास, पुरानी रेल्वे रोड.	9779233493
जलगाँव	**(29 जुलाई)**	शाम 4 से 7	व्हाइट हाउस, प्लोट नं-12, गणपति नगर, रोटरी होल के पास.	9420942944
जोधपुर	**(28 जुलाई)**	शाम 4 से 7	कैलाश पुस्तक भंडार, जैन स्कूल हॉस्पिटल के पास, धरदा का बास, महामंदिर, जोधपुर.	6351774386
कानपुर	**(29 जुलाई)**	दोपहर 12-30 से 6	123/172, C ब्लाक, गोविन्द नगर, कानपुर.	9452525981
कोलकाता	**(29 जुलाई)**	सुबह 9-30 से 4	श्रीमद् राजचंद्र सेन्टर, दूसरी मंजिल, 19/2/A श्यामनंदा रोड, बेलटाला गर्ल्स स्कूल के पास, भवानी पोर.	9830080820
खरगोन	**(29 जुलाई)**	दोपहर 2 से 6	77, विश्वसखा कॉलोनी, खरगोन.	9425643302
लखनऊ	**(29 जुलाई)**	शाम 4 से 7	मधुर संगीत विद्यालय, 563/74 चित्रगुप्त नगर, आलमबाग, लखनऊ.	8090177881
मुंबई	**(27 जुलाई)**	शाम 4 से 8-30	त्रिमंदिर, ऋषिवन, काजुपाडा, बोरीवली-पूर्व.	9323528901
नागपुर	**(27 जुलाई)**	शाम 5 से 8	निर्मल नगरी, बिल्डिंग नं B2/3, फ्लैट नं 6E, शीतला माता मंदिर के पास, उमरेड रोड, नागपुर.	7249362999
नासिक	**(29 जुलाई)**	शाम 5 से 7-30	आर.पी. विद्यालय, निमाणी बस स्टैंड के पास, पंचवटी.	9021232111
पटना	**(29 जुलाई)**	सुबह 10 से 6	महाराणा प्रताप भवन, आर्य कुमार रोड, दिनकर गोलंबर के पास, पटना.	7352723132
पाली	**(27 जुलाई)**	शाम 4-30 से 7-30	प्रजापति समाज भवन, केसरी गार्डन, इन्दिरा कॉलोनी.	9461251542
पूणे	**(29 जुलाई)**	सुबह 10-30 से 6	महावीर प्रतिष्ठान स्कूल, सेलिसबरी पार्क रोड, गुलटेकडी, पुणे.	8830627538
रायपुर	**(27 जुलाई)**	सुबह 8 से 11	दादा भगवान सत्संग सेंटर, अशोक विहार कॉलोनी के पास, गोंदवारा, रिंग रोड नं 2, भनपुरी, रायपुर.	9329523737
सतारा	**(28 जुलाई)**	दोपहर 2-30 से 6	आदर्श अपार्टमेन्ट, 929 शनिवार पेठ, भावे सुपारी के पास, सतारा.	7722051313
सांगली	**(29 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6	23, श्री शक्ति, एकता कॉलोनी, मार्केट कमिटी होउसिंग सोसाइटी, न्यू रेल्वे स्टेशन के पास, सांगली.	9423870798
सोलापुर	**(29 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6	निखिल थोबड़े नगर, बी-18, आयशानी बुन्लोव, अवंतिका नगर के पास, साईंझ सुपर मार्केट के पीछे, सोलापुर.	8421899781
उदयपुर	**(27 जुलाई)**	शाम 5 से 7	1462, छोटी नोखा, कुम्हारोका भट्टा के अन्दर, वार्ड नं 39, उदयपुर.	9414538411
उज्जैन	**(29 जुलाई)**	शाम 5 से 8	298, सेक्टर-C, विवेकानंद कॉलोनी, विवेकानंद गार्डन के सामने, उज्जैन.	9425195647

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

ग्वालियर **दिनांक : 20 जुलाई** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9425712481
स्थल : सत्कार गेस्ट हाउस, इन्कम टैक्स ऑफिस के पास, कैलाश विहार, सिटी सेन्टर, ग्वालियर.

उज्जैन **दिनांक : 21 जुलाई** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9425195647
स्थल : गुजराती समाज धर्मशाला, नई सड़क, देना बैंक के पास, उज्जैन.

इंदौर **दिनांक : 23 जुलाई** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 8319971247
स्थल : दादा दर्शन, 89-B, टंकी हॉल मेइन रोड, राजेन्द्र नगर रेलवे स्टेशन के पास, इन्दौर.

अंजड **दिनांक : 24 जुलाई** **समय :** शाम 8 से 10 **संपर्क :** 9617153253
स्थल : पाटीदार समाज, अन्नपूर्णा भवन, बाय-पास रोड, अंजड.

खरगोन **दिनांक : 25 जुलाई** **समय :** शाम 8 से 10 **संपर्क :** 9425643302
स्थल : श्रीराम धर्मशाला, बस स्टैंड के पास, खरगोन.

जबलपुर **दिनांक : 26 जुलाई** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9425160428
स्थल : 5वी मंजिल, समदडीया मॉल, ग्रांड समदडीया होटल के ऊपर, सिविक सेंटर, जबलपुर.

भोपाल **दिनांक : 28 जुलाई** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9425190511
स्थल : जनक विहार कॉम्प्लेक्स, तीसरा माला, मेडीस्कैन सेंटर के ऊपर, एयरटेल ऑफिस के सामने, मालविया नगर.

कोल्हापुर **दिनांक : 30 जुलाई** **समय :** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 9960787776
स्थल : श्री राधा क्रिष्ना मंदिर, 2 लेन, शाहुपुरी मंदिर, कोल्हापुर.

सातारा **दिनांक : 2 अगस्त** **समय :** शाम 3-30 से 5-30 **संपर्क :** 7350998503
स्थल : आदर्श एपार्टमेन्ट, भावे सुपारी के पास, 929, शनिवर पेठ, सतारा.

इचलकरंजी दि : **31 जुलाई** **संपर्क :** 7016266325 **तिरुपुर** दि : **25 सितम्बर** **संपर्क :** 9486112490
सांगली दि : **1 अगस्त** **संपर्क :** 9834321233 **ईरोड/सेलम** दि : **26 सितम्बर** **संपर्क :** 7200740000
हैद्राबाद दि : **22 सितम्बर** **संपर्क :** 9885058771 **तिरुच्चीराप्पल्ली** दि : **27 सितम्बर** **संपर्क :** 9600755114
हैद्राबाद दि : **23 सितम्बर** **संपर्क :** 9885058771 **मदुरई** दि : **28 सितम्बर** **संपर्क :** 9344100111
नेल्लोर दि : **24 सितम्बर** **संपर्क :** 9441851277 **चेन्नई** दि : **29-30 सितम्बर** **संपर्क :** 7200740000

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

उड़ीसा के महात्माओं के लिए भुवनेश्वर में आप्तपुत्र के साथ विशेष शिबिर

तारीख - **28 - 29 जुलाई** , रजिस्ट्रेशन के लिए **संपर्क - 7008920454**
स्थल : 27, NRO सागर, श्रीक्षेत्र, ग्रामेश्वर नगर, पो.-जनला, खुर्दा (खोर्धा), भुवनेश्वर, उड़ीसा.

पूज्य नीरूमाँ तथा पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 5 से 5-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर सोम से शनि रात 8-30 से 9 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)

USA -Canada - **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST

UK - **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

Pujya Deepakbhai's USA Satsang Schedule 2018

Contact no. for all centers in USA : 1-877-505-DADA (3232) & email for USA - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact No. & E-mail
23 Jul	Mon	Jacksonville, FL	GP Shibir	10-00 AM	12-30 PM	Hyatt Regency Jacksonville Riverfront, 225 E Coastline Drive Jacksonville, FL 32202	Extn. 10 gp@ us.dadabhagwan.org
23 Jul	Mon	Jacksonville, FL	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM		
24 Jul	Tue	Jacksonville, FL	GP Shibir	10-00 AM	12-30 PM		
24 Jul	Tue	Jacksonville, FL	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM		
25 Jul	Wed	Jacksonville, FL	GP Shibir	10-00 AM	12-30 PM		
25 Jul	Wed	Jacksonville, FL	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM		
26 Jul	Thu	Jacksonville, FL	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
26 Jul	Thu	Jacksonville, FL	GP Shibir - GNC/General Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
27 Jul	Fri	Jacksonville, FL	GP Day	8-00 AM	1-00 PM		
27 Jul	Fri	Jacksonville, FL	GP Day	5-00 PM	7-00 PM		
28 Jul	Sat	Jacksonville, FL	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
28 Jul	Sat	Jacksonville, FL	Gnan Vidhi	5-00 PM	8-00 PM		
31 Jul	Tue	Maryland, D.C.	Satsang	6-30 PM	9-30 PM	F. Scott Fitzgerald Theatre 603 Edmonston Drive Rockville, MD 20851	Extn. 1010 mddcva@ us.dadabhagwan.org
1 Aug	Wed		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
1 Aug	Wed		Gnan Vidhi	6-00 PM	9-00 PM		
2 Aug	Thu		Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-30 PM		
7 Aug	Tue	New York, NY	Satsang	6-30 PM	9-30 PM	NEW YORK GANESH TEMPLE Hindu Temple Community , Center 143-09 Holly Avenue, Flushing, NY 11355	Extn. 1021 newyork@ us.dadabhagwan.org
8 Aug	Wed		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
8 Aug	Wed		Gnan Vidhi	6-00 PM	9-00 PM		
10 Aug	Fri	New Jersey, NJ	Satsang	6-30 PM	9-30 PM	The Hanover Marriott, 1401 Route 10 East, Whippany, NJ 07981	Extn. 1020 newjerseypennsylvania@ us.dadabhagwan.org
11 Aug	Sat		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
11 Aug	Sat		Gnan Vidhi	5-00 PM	8-00 PM		

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

1 सितम्बर (शनि) शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **2 सितम्बर** (रवि) सुबह 10 से 12 - **आप्तपुत्र सत्संग**

2 सितम्बर (रवि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

3 सितम्बर (सोम) - रात 10 से 12 - **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम**

5 सितम्बर (बुध) सुबह 9 बजे से **पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम**

6 से 13 सितम्बर (गुरु से गुरु) **पर्युषण पारायण - आप्तवाणी 13 (उ.) पर सत्संग**

सूचना : 1) 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको **AKonnect** पर अथवा अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 9924348880 / 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 2 से 7 के दौरान) पर दि. 12 अगस्त 2018 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-13 (उ.) (गुजराती) पर वाँचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समझ सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते है।) 3) ओढ़ने-बिछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947